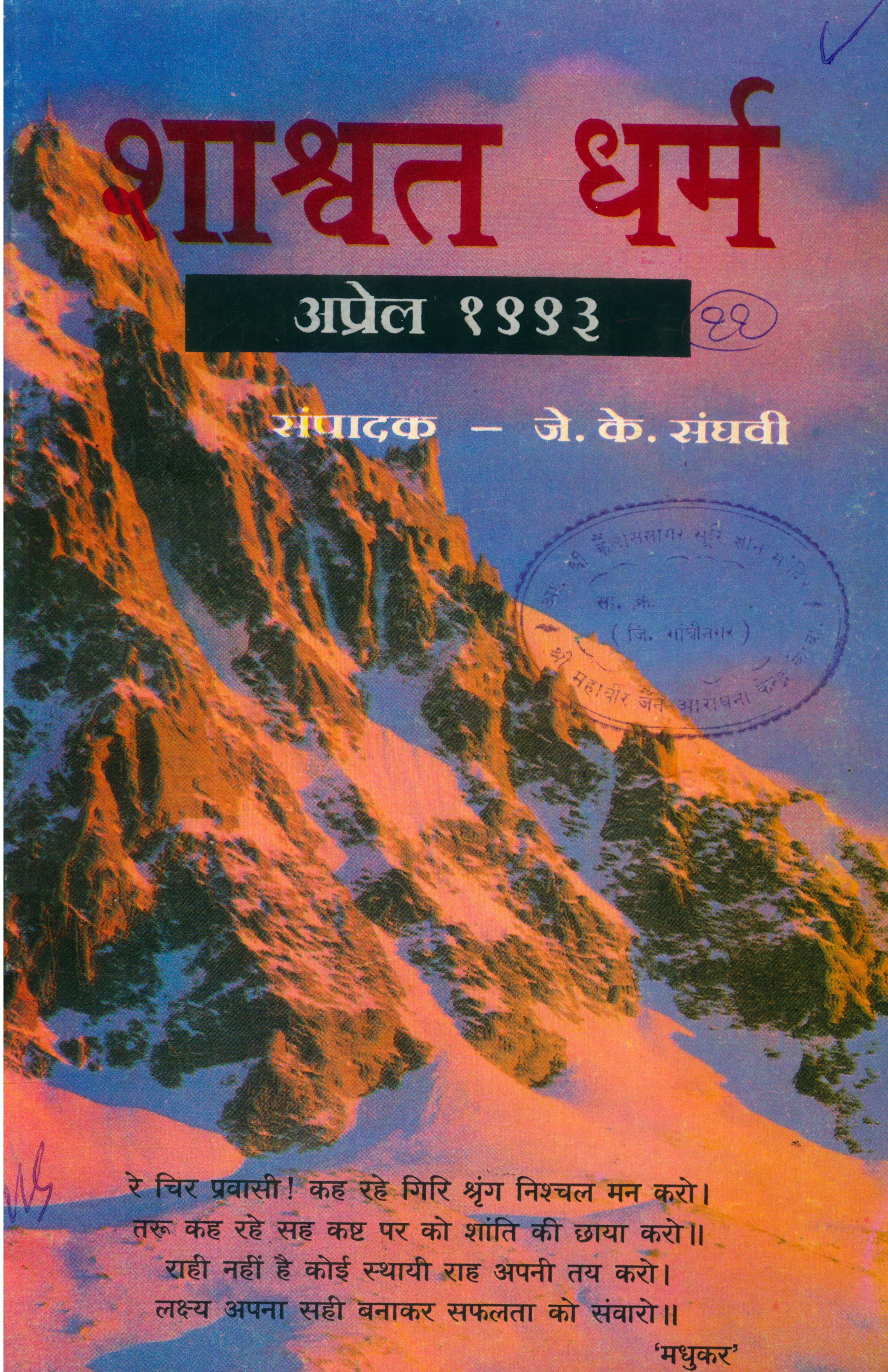

शाश्वत धर्म

अप्रेल १९९३

संपादक – जे. के. संघवी

श्री कैलाससागर सूरि ज्ञान मंदिर
(जि. गांधीनगर)
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र

रे चिर प्रवासी! कह रहे गिरि श्रृंग निश्चल मन करो।
तरू कह रहे सह कष्ट पर को शांति की छाया करो॥
राही नहीं है कोई स्थायी राह अपनी तय करो।
लक्ष्य अपना सही बनाकर सफलता को संवारो॥

'मधुकर'

- शाश्वत धर्म के संरक्षक -

* शा. ओटमल वेलाजी कांकरिया - सुरा निवासी , * शा. ताराचंद फुटरमल फौजमल, भानाजी वेदमुथा-आहोर निवासी, * कटारिया संघवी भंवरलाल, उगमचंद, विरेन्द्रकुमार राजेन्द्रकुमार बेटा पोता तोलाजी धाणसा निवासी, * शा. तिलोकचंद, नरसींगमल, पुखराज, परखचंद, सांवलचंद, बेटा पोता प्रतापचंदजी - सरत निवासी, * संघवी मिश्रीमल, हस्तीमल, समरथमल, हिरालाल शांतिलाल जिनेशकुमार, बेटा पोता कन्नाजी कटारिया-जाखल निवासी. * नैनावा श्री जैन श्वेतांबर सकल संघ, गुरूभक्तगण-नैनावा, * श्री समकित गच्छीय जैन श्वेतांबर संघ-धानेरा, स्व. मयाचंद धुलाजी की स्मृति में धर्मपत्नी धापुबाई, सुपूत्र कुशलराज, भ्राता निहालचंद एवं श्रीमती जडावबेन कातरेला वोहरा आहोर निवासी, * मेहता तेजराज, जयंतीलाल, राजेन्द्रकुमार, अरविंदकुमार, बेटा पोता रायचंदजी जसराजजी भूती निवासी, * मोरखीया चंदुलाल, बाबुलाल, रसिकलाल मेहशकुमार, परेशकुमार, अल्पेशकुमार, रुपेशकुमार, पुत्रपौत्र स्व. मोरखीया नानचंद मूलचंद भाई-थराद निवासी, * स्व. मुणोत रिखबचंदजी की स्मृति में धर्मपत्नी ठेलीबाई सुपुत्र बाबुलाल, सुमेरमल, अशोककुमार - रमणिया निवासी, * श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट - मद्रास, * स्व. रामाणी शेषमलजी की स्मृति में मांगीलाल, फुटरमल, शांतीलाल, किशोरकुमार, बेटा पोता खुशालजी रामाणीगुडा बालोतान (फर्म. शांतिलाल ज्वेलर्स, नेल्लोर) * शा. मोहनलाल, पारसमल, सुरेशकुमार, किशोरकुमार, कमलेशकुमार, अरविंदकुमार, बेटा पोता सांकलचंद जेरूपजी - भैंसवाड़ा निवासी (गोल्डन ज्वेलरी, नेल्लोर), * स्व. सुगीबाई धर्मपत्नी अचलजी की स्मृति में पुत्र कांतिलाल प्रपौत्र रमेशकुमार बागरा निवासी, * श्री श्वेताम्बर जैन संघ - सियाणा, * श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ - थराद * श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ - चौराऊ, * दोशी सोमतमल, गुमानमल, सुखराज सांवलजी ह. गुमानमल सावलचंदजी चेरिटेबल ट्रस्ट, बम्बई , सुशीला बहन की स्मृति में भीमराज, हिमांशकुमार, श्रेणिककुमार बेटापोता बेचरदासजी छाजेड़ - नैनावा निवासी हाल मु. सांचोर (राज), * श्री गोड़ी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढी - सोनारी सेरी - थराद, प्रतिष्ठा प्रसंगे गुरूभक्तों द्वारा. * स्व. जेठमलजी खुमाजी की स्मृति में चंदनमल, कैलाशचन्द, हंसराज, शीतलकुमार, अश्विनकुमार परिवार बागरा निवासी, फर्म : राजस्थान फायनेन्स कार्पोरेशन - काकीनाडा, *

* श्री विमलनाथ जैन डोसी देहेरासर - थराद * श्री सौधर्म वृहत्पोगच्छ जैन संघ - आणंद (गुजरात)
* श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक श्री संघ - थलवाड़ (राज.) * श्री वृहत्पोगच्छीय जैन संघ - जावरा (म. प्र.)

1302

(जि. गांधीनगर)
जैन आराधना केन्द्र

शाश्वत धर्म

शाश्वतता का प्रवर्तक हिन्दी मासिक

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रवर्तक हिन्दी मासिक

संस्थापक व्या. वा. आचार्यदेवश्री यतीन्द्रसूरीश्वरजी

सम्पादक : जे. के. संघवी

सहसम्पादक : शांतिलाल सुराना

सदस्यता शुल्क
बीस वर्षीय-पांचसौ रुपये
दस वर्षीय-तीन सौ रुपये
तीन वर्षीय- एक सौ रुपये

विज्ञापन शुल्क (एक बार)
पूरा पृष्ठ - पांच सौ रुपये
आधा पृष्ठ - तीन सौ रुपये
पाव पृष्ठ - दो सौ रुपये
अंतिम कवर पृष्ठ - एक हजार रुपये
कवर पृष्ठ २ या ३ - सात सौ रुपये

सम्पर्क सूत्र

कार्यालय © ५३४ ०७ २४ निवास © ५३४ ८० ७३

शाश्वत धर्म कार्यालय

डेवलेपमेन्ट बैंक के पास, जामली नाका-थाने-४०० ६०१ (महाराष्ट्र)

वर्ष : ४० ★ अंक-११ ★ एप्रिल १९९३

अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद द्वारा संचालित

अवैतनिक सम्पादन : अव्यवसायिक प्रकाशन

शाश्वत धर्म – अप्रेल १९९३

झरोखा

- सम्पादकीय .... जे. के. संघवी ३
- स्वावलम्बन ....स्व. आचार्य श्री यतीन्द्रसूरिजी म. सा. ५
- अनेकांत.............................आचार्य श्री जयंतसेनसूरीश्वरजी ११
- प्रेरक प्रसंग ....श्री गदाधर भट्ट १२
- वर्तमान में महावीर के सिद्धांन्तों की प्रासंगिकता .... कु. चेतना मेहता १३
- महावीर और हम (क्षणिका) .... मुनि श्री तरूणसागरजी १५
- श्री पार्श्वनाथ जिनस्तवन (२३) .... मुनि श्री जयानंदविजयजी म.सा. १७
- आप तो मानव हैं (कविता) .... श्री दिलीप धींग १८
- महावीर गौतम के देश में (कविता) .... श्री जगदीप 'हर्षदर्शी' १८
- क्या आप जानते हैं? .... धर्ममित्र १९
- महावीर प्रभु (कविता) .... श्री भंवरलाल एम. जैन २०
- रूकिये! पढ़िये!! सोचिये!!! .... मुसाफिर २१
- युवा संदेश (कविता) .... मुनि श्री रत्नसेन विजयजी म.सा. २२
- सरे राह चलते-चलते .... प्रवासी २३
- ज्ञान कसौटी (२२) .... श्री महेन्द्र जे. संघवी २४
- स्वास्थ्य चर्चा .... संकलित २५
- समाचार दर्शन .... संकलित २७
- समाचार सार .... संकलित ३०
- साहित्य स्वीकार .... संकलित ३१
- मानपाड़ा प्रतिष्ठोत्सव एक रपट .... संकलित ३३
- चित्रमय झलकियाँ ४९
- श्री मानपाड़ा शांतिनाथ स्तवन .... मुनि श्री सम्यग्रत्नविजयजी ५७
- श्री मानपाड़ा शांतिनाथ प्रभु स्तवन .... श्री भंवरलाल एम. जैन ५८

गुजराती विभाग

- प्रेरणात्मक नवकार .... मुनि श्री प्रशान्तरत्न विजयजी ५९

लेखक के विचारों से सम्पादक अथवा परिषद की सहमति आवश्यक नहीं है।

सम्पादकीय

मानव कल्याण के नाम पर कुर्बानी

अनुमान है कि अकेले अमेरिका में ही प्रतिवर्ष दस करोड़ से ज्यादा बेगुनाह गूंगे जीव जंतुओं को 'मानव-कल्याण' के नाम पर मौत के मुंह में धकेल दिया जाता है। इनमें से ज्यादा अस्पतालों, विश्वविद्यालयों, रसायनों और दवाई की कम्पनियों की प्रयोगशालाओं में दम तोडते हैं। प्रयोगशालाओं में कुत्तों, बिल्लियों, बंदरों, चिंपैंजी, खरगोशों और चूहों जैसे अनेक प्राणियों पर बेवजह अत्याचार हो रहे हैं। कहीं इनकी खाल उतारी जाती हैं तो कहीं आँखें फोड़ दी जाती हैं। कहीं उन्हें भूखा-प्यासा रखकर अकेले तड़पने के लिये छोड़ दिया जाता हैं तो कभी इन्जेक्शन दे-देकर इनका शरीर रसायनों से भर दिया जाता है। इन्हें जीवाणुओं-विषाणुओं से ग्रस्त कराकर भयानक रोगों की पीड़ा देना तो आम बात है। जनरल मोटर कंपनी अपनी कारों को ज्यादा सुरक्षित बनाने के लिये अनेक प्राणियों को कृत्रिम रूप से दुर्घटनाग्रस्त करवा देती है। अमेरीकी अंतरिक्ष संगठन 'नासा' अपने अंतरिक्ष प्रयोगों में कई प्राणियों का इस्तेमाल करता है। सेना में भी कई प्राणियों का इस्तेमाल होता है।

दुनियाँ की अनेक प्रयोगशालाओं में बेरोक् टोक धडल्ले से प्राणियों का इस्तेमाल हो रहा है। इससे वन्य प्राणियों पर आये संकट का अनुमान लगाया जा सकता है। हमारे देश में भी अत्याचार का यह सिलसिला जारी है। 'नेशनल रीसर्च डेवलपमेन्ट कार्पोरेशन' की वैज्ञानिक पत्रिका 'आविष्कार' में छपी एक रिपोर्ट के अनुसार देश के लखनऊ स्थित केन्द्रीय औषध अनुसंधान संस्थान में ही हर साल ५०,००० से ज्यादा प्राणी विभिन्न वैज्ञानिक अनुसंधानों की भेंट चढ़ जाते हैं। यदि देश भर की प्रयोगशालाओं के आंकडे इकट्ठे किये जायें तो भयावह स्थिति सामने आयेगी। जीव विज्ञान की पढ़ायी में भी हर साल लाखों बेगुनाह मेढ़क प्रयोगशाला की भेंट चढ़ जाते हैं। सन् १९८० में उनकी संख्या पौने दो करोड़ से ज्यादा आंकी गयी थी। अनेक रोगों का टीका तैयार करने में हर साल अपने देश में लाखों जानवरों को कुर्बान किया जाता है। कसौली की केन्द्रीय अनुसन्धानशाला में डिप्थीरिया, टिटनेस, पोलियो, रेबीज आदि के टीके तैयार करने के लिये घोड़े, खच्चर, भेड़ और चूहों का इस्तेमाल किया जाता है। सिर्फ रेबीज की टीका तैयार करने में ही हर सप्ताह १३०० भेंड़े खप जाती है। जबकि जापानी मस्तिष्क शोध (ऐंकफेलाइटिज) का टीका बनाने में हर सप्ताह ५० हजार चूहे कुर्बान करने पडेंगे।

वैज्ञानिक कहते हैं कि प्राणियों पर प्रयोग करना जरूरी है, यदि ऐसा न होता तो कई प्रकार के टीकों का आविष्कार न हो पाता एवं कई जानलेवा बिमारियों का इलाज नहीं ढूंढ पाते।

लेकिन जरूरी की आड़ लेकर कई बेतुके प्रयोग भी किये जाते हैं। जैसे आजकल पश्चिमी देशों में (कुछ हद तक हमारे देश में भी) चिन्ता और उदासी के दो मनोवैज्ञानिक रोग बड़ी तेजी से फैल रहे हैं। इनकी दवा खोजने की कोशिश में अनेक प्राणियों पर प्रयोग किये जा रहे हैं। वैज्ञानिक कहते हैं कि ऐसी दशा में उनके दिमाग की हालत जानकर सही दवा तैयार की जा सकती है। अमेरीका में कुत्तों में ऐसी दशा पैदा करने के लिये उन्हें इस तरह कैद कर प्रताड़ित किया जाता है कि उनमें लाचारी और निराशा की भावना पनपे। पर चिन्ता या उदासी अंगों के रोग नहीं हैं। ये तो बिगड़ती सामाजिक दशाओं की उपज है, सो कुत्तों पर किए गए प्रयोगों से क्या हांसिल होगा ?

इसी तरह शराब पीने के दुष्परिणामों की जांच के लिये इंग्लैण्ड में चूहों पर प्रयोग किये जाते हैं तो अमेरीका में बंदरों पर। लगातार शराब पीने से होनेवाली समस्याओं से अध्ययन के लिये भी बंदरों पर प्रयोग किए जाते हैं। अमेरीका में गाभिन भेडों को बहुत ज्यादा दाब पर रखकर यह जानने

की कोशिश की जा रही है कि क्या गर्भवती महिलायें गहरे सागर में गोताखोरी कर सकती है। इस सब प्रयोगों का क्या तुक हैं, समझ में नहीं आता। हाल ही में 'मिनी पेग', चूहों और बंदरों पर अंतरिक्ष प्रयोगों में इस्तेमाल करने के लिए बैठक हुयी। फ्रांसीसी वैज्ञानिकों ने भारहीनता का प्रभाव जानने के लिये चूहों को चौदह दिन तक बांधकर उलटा लटकाने की सलाह दी। इन प्रयोगों की अनिवार्यता पर बड़ा सवालिया निशान लगा हुआ है।

इन जैसे एवं अन्य तमाम प्रकार के प्रयोगों के दौरान जिन क्रूर व दर्दनाक हालातों से प्राणियों को गुजरना पड़ता है उसकी गाथा सुनकर हमारे रोंगटे खड़े हो जाते है। येल यूनिवर्सिटी के चिकित्सा-विभाग में दर्द पर हो रहे शोधों के दौरान एक ऐसा ही क्रूर प्रयोग चूहों पर किया जाता है। चूहों के गर्दन और सीने की कुछ तंत्रिकाएं इस तरह काट दी जाती हैं कि वे खुद ही अपने अंगों को चबाना शुरु कर देते हैं। ऐसी दयनीय हालत में उन्हें ११ से १२० दिनों तक जिंदा रखा जाता है। इस दौरान उनकी पीड़ा का अंदाज लगाना मुश्किल नहीं है। अलास्का युनिवर्सिटी के समुद्र विज्ञान संस्थान में सील मछलियों के साथ भी ऐसी ही क्रूरता बरती जाती है। उनकी शारीरिक और मानसिक क्षमताओं पर वैज्ञानिक ढंग से रोक लगाकर उन्हें समुद्र में छोड़ा जाकर उनकी प्रतिक्रियाओं पर अध्ययन किया जाता है। कई प्रकार के प्रयोगों में सील मछली को एक-एक बार में २२-२२ घंटों तक यातनायें झेलनी पड़ती है।

बंदरों, लंगूरों और प्राणियों पर भी कई अमानवीय और क्रूर प्रयोग किये जाते हैं, विशेषकर नई दवाईयों की खोज एवं प्रजनन संबंधी प्रयोगों में इन्हीं को इस्तेमाल किया जाता है। इनका कसूर सिर्फ इतना है कि ये शारीरिक रूप से हमारे सबसे करीबी संबंधी हैं। लंगूरों को बधिया बनाकर प्रयोग करना आम बात है। किसी भी नई दवाई को पहले बंदरों पर आजमाया जाता है। वैज्ञानिक कहते हैं कि मानव कल्याण के लिये बंदरों को कुर्बानी तो देनी होगी। जबकि यह जरूरी नहीं है कि उन पर किया सुरक्षित परीक्षण हमारे लिए भी सुरक्षित ही सिद्ध हो। ऐसा ही एक दर्दनाक हादसा हो चुका है।

'थैलिडोमाइड' नामक दवा की खोज के बाद इसे चूहों, गिनीपिग, बिल्लियों और अंत में बंदरों पर आजमाई जाकर उसे सुरक्षित पाया गया। सुरक्षित मानकर सन् १९५७ में यह जर्मनी के बाजारों में बिकने लगी। कुछ अन्य देशों में भी इसका इस्तेमाल शुरू हो गया। थोड़े समय बाद जहाँ इसका उपयोग किया जाता था, उन देशों में विकृत शिशुओं के जन्म की बाढ आ गयी। इन शिशुओं के हाथ विकसित न होकर ठूंठ जैसे रह जाते थे। खोज-बीन करने पर पता लगा कि यह हादसा 'थैलिडोमाइड' की वजह से हुआ। तुरन्त इस पर रोक लगा दी गई।

कई प्रकार के नये-नये रोगों का तो जन्मदाता ही आधुनिक विज्ञान है। विज्ञान द्वारा आधुनिक उपभोगों के साधन की भरमार ने उपभोक्ता वाद संस्कृति को जन्म दिया है। फलस्वरुप मानव इतना बेहरम और निर्दयी हो गया है कि वह सोचने लगा है जैसे पृथ्वी पर जीने के लिये सिर्फ मानव को ही अधिकार है। इसके लिये प्रकृति का भी वह अंधाधुंध दोहन करने पर तूल गया है। फलस्वरूप पर्यावरण बिगड़ने से नाना-प्रकार के रोगों का वह लगातार शिकार होते जा रहा है। एक तरफ रोग बढते जा रहे हैं दूसरी ओर उनके अनुसंधान में नई-नई दवाईओं के आविष्कार में वह लग गया है। रोगों की उत्पत्ति का मूल स्थान नहीं ढूंढकर वह दवाईयों की खोज के द्वारा उसे रोकने के प्रयास में मशगुल है।

यदि हम अपने पुराने रहन-सहन, विशुद्ध खानपान को अपनायें तो कितने ही रोगों से सहज बच सकते हैं। हमारे पूर्वजों द्वारा विकसित आयुर्वेद में भी कई रोगों की हिंसामुक्त दवायें उपलब्ध हैं। जिनमें एलोपेथी दवाईओं की तरह साइड इफेक्ट का भी कोई खतरा नहीं। याद रखें एलोपेथी दवाईयों में न जाने कितने बेकसूर प्राणियों का बलिदान एवं उनकी आहें छुपी हुयी है।

(जे. के. संघवी)

J. K. Sanghvi

(गत अंक का शेष)

स्वावलम्बन

– स्व. आचार्य श्री यतीन्द्रसूरीश्वरजी म. सा.

यह निःसन्देह समझ लेना चाहिये कि आत्म-विश्वास और निर्धारित लक्ष्य की संलग्नता में अगाध शक्ति है। संसार के कठिनतम कार्य इसी महाशक्ति से सम्पन्न हो सफल होते हैं। जो कार्य धन से, बुद्धि से और प्रभुत्व से नहीं हो सकता उसको यही महाशक्ति क्षण भर में सम्पन्न कर सकती है। जहां आत्मविश्वास होता है, वहाँ सन्देह, निराशा और असफलता कोसों दूर भाग जाती है। यह गुण निर्धनों का धन, दुर्बलों का बल, महापुरूषों का तेज और असहायों का सहारा है। मुनष्य इसी शक्ति के बल पर कर्मवीर बनता है और स्व-पर का पथ कण्टक-रहित कर देता है। अतएव मुनष्य को आत्मविश्वास और निर्धारित लक्ष्य से कभी न हटना चाहिये।

(६) विजय पाने का साहस रखने वाले पुरुषों को ही विजय श्री मिलती है, क्योंकि साहस, योग्यता एवं बुद्धि-बल से ही अत्युत्तम मानी गई है। जिस धर्म या समाज के व्यक्तियों में साहस नहीं है, उन्हें संसार में जीवित रह कर किसी भी कार्य को करने का अधिकार नहीं है। साहस-हीन व्यक्तियों का धर्म और समाज पददलित हो नाम शेष रह जाता है। साहस के अभाव में उपयुक्त निर्णय और महत्त्व की आकांक्षाएँ कभी भी कार्य रूप में परिणित नहीं हो पाती। जो मनुष्य साहस करते भी हैं तो वे बुरे विचार और असन्मार्ग को अपनाने लगते हैं, उनका वह साहस बड़ा भारी अहितकर होता है। मनुष्य को सदा खराब प्रवृत्तियों को रोकने का, अपने दोषों को सुधारने का और अपने को समुन्नत बनाने का साहस करना चाहिये। संसार में जितनी भी बुरी प्रवृत्तियाँ एवं अत्याचार बढ़ते हुए दीख रहे हैं, यह सब दुःसाहस का ही दुष्परिणाम है। जो व्यक्ति स्वयं दोषी, दुस्साहसी, दुराचारी एवं सब तरह से पतित है, वह किसी का कभी सुधारा नहीं कर सकता। स्व-पर का सुधारा वही कर सकता है जो स्वयं सुधरा हुआ होता है। खाली आडम्बर और पतितता से कभी सुधार में सफलता नहीं मिलती। सफलता तो सदाचार, उच्च ध्येय, निस्वार्थ वृत्ति एवं पवित्र संयमी मार्ग का अनुकरण करने से ही प्राप्त होती है। आदर्श साहस ही कार्य सिद्धि का मुख्य कारण है। नीतिकारों का कहना है कि :—

रथस्यैकं चक्रं भुजगनमिताः सप्ततुरंगाः।
निरालम्बो मार्गश्चरणविकलो सारथिरपि।।
रविर्यात्येवान्तं प्रतिदिनमपारस्य नभसः।
क्रिया सिद्धिः सत्वेभवति महतां नोपकरणे।।

रथ का पहिया एक ही है, घोड़े सात हैं और सर्प की रज्जु से बँधे हुए हैं, उनका पथ भी आधार रहित आकाश है और हाँकने वाले सारथी के पैर नहीं है—पंगु है। इतना निर्बल साधन होने पर भी सूर्य एक साहस-बल से ही अपार आकाश की प्रतिदिन यात्रा समाप्त करता है। क्योंकि महापुरुषों की क्रिया-सिद्धि उनके कार्य की सफलता उनके प्रबल साहस से ही होती है। सफलता साधनों या उपकरणों की सबल सामग्री पर निर्भर नहीं होती।

मनुष्य की सच्ची सफलता उसकी अटूट लगन और उसके साहस पूर्वक कार्य करने की धुन पर अधिक अवलम्बित है। इसलिये कार्य-सिद्धि की सफलता के लिये मनुष्य को साहस-पूर्वक कार्य करने की अटूट लगन रखना चाहिये।

(७) मरणासन्न व्यक्ति को जिस प्रकार सफल वैद्य प्राण-दान देता है और फाँसी पर चढ़ने वाले अपराधी को सफल न्यायाधीश मृत्यु-दण्ड से मुक्त कर देता है, उसी प्रकार स्वावलम्बन एवं साहस-पूर्वक अपनाया हुआ उत्साह, विपत्ति हताश और निराश्रित अवस्था में जीवन-प्रदान करता है। साहसिक उत्साह शक्ति से कई जटिल समस्यायें एवं उलझी हुई गुत्थियाँ सुलझाई जा सकती हैं। सफलता और विजय यात्रा तक आसानी से पहुँचाने वाली यही परम शक्ति है जिसकी साधना प्रत्येक बाल युवा और वृद्ध मनुष्य को प्रति समय करनी चाहिये। जरा-जीर्ण एवं सामर्थ्यहीन पुरूष भी उत्साह शक्ति से नविन चेतना, नवीन स्फूर्ति एवं नवीन गति प्राप्त कर सकता है।

अतएव प्रत्येक बाल, युवा, वृद्ध स्त्री-पुरुष को चाहिये कि वह कभी अपने जीवन में निराश, निरूत्साही एवं गतिहिन न बनें। कार्य हाथ में लिये बाद यदि विपत्ति संकट या विघ्न-बाधाओं का पहाड़ भी सामने आ जावे तो उसे देख कर न घबराये और न उत्साह का परित्याग करे। विजय और सफलता ऐसे ही व्यक्तियों को मिलती है। इसकी अमोघ साधना से अविलम्ब ही साधक अपने को सिद्ध करने की क्षमता रख सकता है।

(८) बहुत से मनुष्य अपनी मानसिक दुर्बलता से प्रथम तो किसी कार्य को करने में ही हिचकिचाते हैं। कदाचित् उन्होंने किसी कार्य को हाथ में ले भी लिया तो वे उसे अपूर्णावस्था में ही छोड़ भागते हैं। यह आदत उनकी मनुष्यता की घातक है। जब तक मनुष्य इस आत्म-घातिनी दुर्बलता को अलग न करे तब तक वह सरल से भी सरल कार्य को पूर्ण नहीं कर सकता। मनुष्य चाहे कितना ही विद्वान हो, शक्तिशाली हो और कार्यकुशल हो, परंतु जबतक उसका चित्त अस्थिर, संदिग्ध, निरूत्साह, निराश एवं परावलम्बी होता है तब तक उस में किसी भी कार्य को सम्पन्न करने या पूरा करने का सामर्थ्य नहीं होता। अत: अपनी समुन्नति चाहने वाले व्यक्ति को अपनी आन्तरिक दुर्बलताओं को मिटा कर स्थिरचित्त, दृढ़ सङ्कल्प और साहसिक हो प्रत्येक कार्य को साधना चाहिये। यह भली भाँति समझ लेना चाहिये कि:—

संकट आवे उसे झेलना, साहस हिय में लाय।
धीरज धर कर सहते रहना, कभी न करना हाय।।
सुख को देख कभी मत मन में जाया करते फूल।
दु:ख को देख न घबराना तू वह है सुख का मूल।।

(९) कुछ अर्ध-शिक्षित एवं मान-लोभी मनुष्यों की आदत होती है कि वे सभासंस्थाओं या अन्यान्य आयोजनों में सन्मान पाने की जिज्ञासा से कपोल-कल्पित आडम्बर रच कर गुणी एवं विद्वानों की सभा में जा बैठते हैं, और प्रयत्न करते हैं सन्मान पाने का, विद्वान् समझदार कहलाने का। बाह्याडम्बर के रच लेने से मनुष्य कभी सन्मान का

पात्र नहीं बन सकता। इससे तो उल्टा उसका अपमान ही होता है। अपवाद स्वरूप यदि भ्रान्तिवश कहीं सन्मान हो भी जाय तो वास्तविक स्थिति उघड़ जाने पर सन्मान के बदले दुगना उसका अपमान होता है और आडम्बर प्रिय अपमानित व्यक्ति दुसरों की दृष्टि में घृणा का पात्र बन जाता है। दूसरी बार ऐसे लोगों को कोई बुद्धिमान मनुष्य अपने संगठन में सम्मिलित नहीं करता, फिर उसकी अत्यधिक दुर्गति होती है।

'गुणा: सर्वत्र पूज्यन्ते' संसार में सर्वत्र श्रेष्ठ गुणों की पूजा होती है। बाह्याडम्बर धारी क्षुद्र मनुष्यों की नहीं। स्वयं को सन्मानित करने के लिये मनुष्यों को चाहिये कि वे दूसरे व्यक्तियों का सन्मान कर प्राणिमात्र को आत्मवत् समझने का प्रयत्न करे। ऐसा साहस करने से वह अवश्य एक दिन समादरणीय हो सकता है। आदर्श आचरण करने वाला मनुष्य चाहे किसी देश या वेश में क्यों न हो, परीक्षक और गुणज्ञ लोग तो उसे स्वयं खोज लेते हैं और उसका सन्मान करने लगते हैं। सच्चा सद्गुणी व्यक्ति अपनी पवित्र प्रभा से सदा प्रकाशमान रहता है। कहा है कि:—

मणिर्लुण्ठति पादाग्रे काच: शिरसि धार्यन्ते।
क्रय विक्रय वेलायां काच: काचो मणिर्मणि: ।।

मणि चाहे पददलित हो लुढ़कती रहे और काँच चाहे मस्तक पर धारण किया जाय, फिर भी क्रय-विक्रय के समय में तो काँच, काँच ही और मणि, मणि ही रहती है। कारण यही कि योग्यता एवं सच्चे गुण छिपाये नहीं छिपते। वाटिका में पुष्प खिलता है और उसकी सुगन्ध चारों ओर फैलती है तो मनुष्य उसे खोजने के लिये बिना बुलाये वाटिका की ओर चले आते है। कहने का तात्पर्य यह है कि अच्छे गुणों का प्रत्येक स्थान पर आदर होता है और मनुष्य अपने आदर्श गुणों से प्रख्यात, यशश्वी एवं सन्मानित होता है—अच्छे कुल में जन्म लेने मात्र से ही नहीं। श्रेष्ठ गुण वाले व्यक्ति आत्मप्रशंसा से सदा दूर रहते हैं। उन्हें मानापमान या लोक-पूजा की तनिक भी लालसा या चिन्ता नहीं होती। कहा भी है कि:—

बडा बडाई न करे बड़ा न बोले बोल।
हीरा मुख से न कहे, लाख हमारो मोल।।

(१०) जो पुरूष अच्छा कार्य करना चाहता है, अपनी शक्तियों को और अपने विचारों को जन-सेवा एवं धार्मिक कार्यो में लगाना चाहता है उसे सर्व प्रथम एकाग्रवृत्ति का अभ्यास करना चाहिये। अस्थिरता और चञ्चलता कार्य-साधना में बाधक स्वरूप है। आज देश या विदेशों में जितने भी नये नये अविष्कार हुए एवं होते जा रहे हैं उन सबकी सफलता का श्रेय एकाग्र-वृत्ति पर ही अवलम्बित है। एकाग्रवृत्ति के साथ मनुष्य को समय का भी पूरा ध्यान रखना आवश्यक है। क्योंकि समय की नियमितता भी कार्यसाधना में सफलता का साथ देती है। जो लोग समय की प्रतीक्षा करते रहते हैं उनका कोई भी कार्य व्यवस्थित नहीं हो पाता। जिस प्रकार अग्नि की एक चिनगारी टनों रूई के ढेर को जलाने के लिये पर्याप्त है। कहावत भी है कि, "का वर्षा जब कृषि सुखाने, समय चूकी पुनि का पछताने" जो

मनुष्य समय की प्रतिक्षा में कार्य को पूरा न कर उसे भविष्य पर छोड़ देते है, वे सदा कार्यसिद्धि से वञ्चित ही रहते हैं। कहा भी है कि :—

नहीं भविष्यत् पर पतियाओ,
मृतक भूत को मत जानो भूत।
काम करो सब वर्तमान में,
सिर प्रभु मन वृढ यह करतूत।।

यह कार्य तो फिर हो जायेगा अभी समय नहीं है, आज नहीं तो कल हो जायेगा। ऐसे विचार मुर्दा दिल के हैं। आज करने योग्य कार्य को कल पर छोड़ देने से उस में अनेक विघ्न उपस्थित होना सम्भव है। अत: प्रत्येक कार्य को जितना जल्दी सम्पन्न कर लिया जाय उतना ही अच्छा है। समय के बिखरे हुए क्षणों एवं पलों को एकत्रित कर उसका सदुपयोग करते कई निराश्रय एवम् अनाथ व्यक्तियों ने संसार में ऐसे महान् कार्य किये हैं जिन्हे देख कर आश्चर्यान्वित और दिग्मूढ़ होना पड़ता है। समय का प्रत्येक क्षण अमूल्य है, उसके प्रत्येक पल में पिछड़े हुए मनुष्य को आगे बढ़ाने की शक्ति है। साथ ही सतत अभ्यास करने को भी नहीं चूकना चाहिये। कुछ आलसी लोग कहा करते हैं कि अब अवस्था भी अधिक हो गई, सीखने का समय भी नहीं मिलता। अत: अभ्यास का क्या किया जाय ? सारा देश ओत-प्रोत है परन्तु उन्हें यह सोचना चाहिये कि प्रति दिन थोड़ा थोड़ा भी अभ्यास करते रहने से निरक्षर भी विद्वान बन जाता है। जैसे कि :—

करत करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।
रसरि आवत जावत, सिल पर परत निशान।।

अतएव मनुष्य प्रथम अपने लक्ष्य को निर्धारित कर ले। उसके साथ ही कार्य का औचित्य, अनोचित्य परख ले। उन्हें प्रमाद एवम् आलस्य-रहित होकर परिश्रम और अति लगन से कार्य को सम्पन्न करने का अभ्यास करे, तो स्वल्प समय में ही कार्य में सफलता मिलेगी। जो व्यक्ति एक बार अपने कार्य के बिगड़ जाने पर भी उदासिन हो कर अभ्यास, परिश्रम एवम् एकाग्रवृत्ति से फिर भी कार्य करने में जुटा रहता है उसका कार्य निस्सन्देह सफल हुए बिना नहीं रहता।

(११) मनुष्य भले ही बल-सम्पन्न हो, सिद्ध पुरुष हो, देवेन्द्र हो, या नरेन्द्र भी हो, परन्तु जब कर्म-सत्ता का कठोर शासन उस पर चलता है, तब उनका समस्त प्रभाव लुप्त हो जाता है और वे प्रभावविहीन हो उसके चरणों में गिर पड़ते हैं। कर्म-सत्ता के सन्मुख वे न तो अपना प्रभाव प्रदर्शित कर सकते हैं और न अपना सिर ऊँचा कर सकते हैं। सगर चक्रवर्ती बत्तीस हजार राजाओं का और छियानवे क्रोड़ सैनाओं का अधिपति था, परन्तु पुत्रों के मरण सन्ताप से उसे कोई नहीं बचा सका। रावण तीन खण्ड का एवम् राक्षसी सेना का स्वामी था, परन्तु कर्म-सत्ता ने उसको राज्य-भ्रष्ट कर नाम शेष बना दिया। महा बलशाली युधिष्ठिर, अर्जुन, भीम, नकुल, सहदेव आदि को और महारानी दमयन्ती के पति नल राजा

को भिक्षुक के समान भूख, प्यास तथा दुःख से दुःखित बना कर वन-तन फिराया। अयोध्या पति सत्यवादी हरिश्चन्द्र को शमसान में चाण्डाल की नौकरी, तारामती को दासी एवम् मगधपति श्रेणिक को पींजरे का अतिथी कर्म-सत्ता ने बनाया। इस सत्ता ने किस-किस के साथ क्या-क्या जुल्म नहीं किये? अरे, इसीने सती शिरोमणी चन्दनबाला को अति संताप देकर बाजार में विक्रय की वस्तु बना डाली।

संसार में ऐसा कोई महाबली राजा, महाराजा, धनी, निर्धनी, मूर्ख, ज्ञानी और विद्वान नहीं जो कर्म-सत्ता के सुदृढ़ शासन के सामने अपने घुटने टेक कर हाथ जोड़े खड़ा न हो। इसके आगे सभी को झुकना पड़ता है। इस कर्म-सत्ता से बचाने वाली यदि कोई चीज़ है तो वह धर्म-सत्ता ही है। धर्म-सत्ता के पवित्रतम शासन के सन्मुख कर्म-सत्ता का कठोर शासन भी कृतकृत्य नहीं हो सकता.

जो पुरुष सच्चे त्यागी, आत्मविश्वासी और अटूट श्रद्धा के साथ धर्माराधना करने वाले होते हैं वे महापुरुष धर्म-सत्ता के अमोघ शासन की छत्र-छाया में सुरक्षित हो कर्म-सत्ता पर विजय प्राप्त करते हैं। कर्मसत्ता पर विजय पाना ऐसे ही निर्भीक और अपने आत्मबल पर स्थिर रहने वाले महापुरुषों का काम है। स्वार्थी, दुराचारी, अविश्वासी और परावलम्बी पुरुषों का नहीं। भगवान् श्री महावीर स्वामी ने बारह वर्ष तक अखण्ड ब्रह्मचर्य, अखण्ड सहिष्णुता, अखण्ड संयम, दोष रहित घोर तपस्या और सुमेरू से भी अधिक आत्मबल धारण करने वाली महा शक्ति सञ्चित की, तभी उन्होंने कर्मसत्ता पर स्वयं शासन कर उसको परास्त की और धर्मसत्ता के बल पर विजयता के साथ सर्वज्ञता एवं सर्वदर्शिता प्राप्त की।

संसार में इसी प्रकार के स्वावलम्बी धर्मवीर महान् पुरुष कर्मसत्ता पर आधिपत्य जमा कर त्रिजगत्पूज्य परमात्म पद प्राप्त कर सकते हैं। ऐसे महापुरुषों के जीवन से शिक्षा ग्रहण कर और अपने आत्मबल पर खड़े रह कर प्रत्येक मनुष्य को अपना जीवन सफल बनाना चाहिये। कहने का तात्पर्य यह है कि परावलम्बन की आशा छोड़ो, स्वावलम्बी बनो, इसी से स्वपर का उद्धार करने की महाशक्ति प्राप्त होगी जीवन ऊँचा लाने का यही एक अमोघ उपाय है। अतएव—

जरा जाव न पीड़ेइ, वाही जाव न वड्ढइ।
जाविंदिया न हायंति, ताव धम्मं समायरे।।

श्री दशवैकालिकसूत्र के अष्टमाध्ययन में कहा है कि वृद्धावस्था जब पीड़ा नहीं देती, शरीर अनेक व्याधियों से ग्रसित नहीं हुआ और इन्द्रियों की शक्ति हीन नहीं हुई, तभी तक मनुष्य को स्वावलम्बी बन कर और परसहाय की आशा न रख कर वास्तविक धर्म का आचरण कर लेना चाहिये। बाद में बुढ़ापा, व्याधियों से घिर जाने और इन्द्रियों की शक्ति नष्ट हो जाने पर कुछ भी नहीं हो सकेगा। जो समय चला गया वह लाख प्रयत्न करने पर भी फिर कभी नहीं आयेगा।

इनाम जीतिऐ — शीघ्र मंगवाइए — इनाम जीतिऐ

'य' अक्षर की चतुर्थ रश्मि प्रकाशित हो गयी है।

ग्रीष्म कालीन समय का सदुपयोग कीजिए इनाम जीतिये।

छः हजार एक सौ एक रूपये

'य' अक्षर का स्वाध्याय चिन्तनात्मक पत्राचार प्रश्नावली पत्र

स्मृति : श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी गुरूदेव के १६६ वें जन्म-दिवस की पावन स्मृति में
आशीर्वाद दाता : प. पूज्य तीर्थप्रभावक राष्ट्रसंत श्रीमद् जयन्तसेन सूरीश्वरजी म. सा.
प्रेरणा दात्री : प. पू. वयोवृद्धा साध्वीजी श्री महाप्रभाश्रीजी म. सा.
संयोजिका : प. पू. डॉ. श्री प्रियदर्शनाश्रीजी म. (M.A.Phd) एवं डॉ. श्री सुदर्शनाश्रीजी म. (M.A.Phd)

विजेताओं को कुल ईनाम ६१०१/- रूपये

प्रथम पुरस्कार - ३१०१/- रूपये, द्वितीय पुरस्कार - १७००/- रूपये एवं तृतीय पुरस्कार - १३००/- रूपये।

विशेष सूचना :-

१) एक परिवार से एक ही प्रश्नावली-पत्र मंगवाए।
२) प्रश्नावली-पत्र भरकर भेजने की अंतिम तिथी १५ जून १९९३।
३) 'भू' अक्षर प्रश्नावली-पत्र का परिक्षा परिणाम दिनांक-१० मार्च १९९३ को घोषित हो चुका हैं। विजेताओं के नाम एवं 'भू' अक्षर प्रश्नावली के सही उत्तर 'य' अक्षर की प्रश्नावली में प्रकाशित किए गए है।
४) प्रश्नावली पत्र निःशुल्क निम्नांकित दोनों पतों में से किसी एक पते से ही शीघ्रताशीघ्र मंगवाए एवं उसी पते पर निर्धारित समय पर प्रेषित करें।

प्रश्नावली-पत्र मंगवाने एवं भरकर भेजने का पता

१) **श्री कालूराजजी कानराजजी मेहता**
सूरज पोल, पो. जालोर,
राजस्थान - ३४३ ००१

२) **शाह देवीचन्दजी छगनराजजी जैन**
सदर बाजार, पो. भीनमाल,
राजस्थान - ३४३ ०२९

जो चीज जिस समय चाहिये, उस समय वह चीज नहीं मिलती है, तो मन अशान्त बन जाता है, अशान्ति मिटाने का एक सरल उपाय है : 'जिस समय जो मिले, उसी में से सन्तोष और आनन्द प्राप्त करो अथवा यह श्रद्धा धारण करो कि इस समय जो मैं चाहता था, वह नहीं मिला, इसमें ही मेरा भला होने वाला होगा !' मन को प्रसन्न रखने की कला अपने पास होनी ही चाहिये । अन्यथा जीवन जीना मुश्किल हो जायगा ।

गतांक से आगे

अनेकान्त

आचार्य श्री जयंतसेनसूरीश्वरजी

"यह जरूर बुरा हुआ ।"

"बुरा क्या हुआ ? यदि वह कहीं अन्यत्र मरती या इसी में मरती और इसमें आग नहीं लगती; तो उसके दाह संस्कार में ढेर सारी लकड़ियाँ लगती । क्या उन सबकी बचत नहीं हुई ?"

यह सुनकर बेचारा मित्र मौन रह गया । उसकी समझ में नहीं आया कि वह क्या कहे ? अच्छा या बुरा ? जो बुरा है वह अच्छा भी है और जो अच्छा है, वह बुरा भी है ।

विभिन्न पहलुओं को समान रूप से देखनेवाली यह व्यापक विचारधारा ही अनेकान्त की पोषिका है ।

तत्त्वार्थाधिगम सूत्र के प्रथम अध्याय के छट्ठे सूत्र में लिखा है – 'प्रमाणनयैरधिगमः ।" अर्थात् प्रमाण और नय इन दोनों से ज्ञान होता है । दोनों में अन्तर यह है कि नय वस्तु के एक अंश का बोध कराता है और प्रमाण अनेक अंशों का । वृक्ष की शाखाएँ वृक्ष से भिन्न भी हैं (इसीलिए शाखा शब्द से उनका बोध होता है ।) और अभिन्न भी (इसीलिए समस्त शाखाओं के कटने पर वृक्ष नहीं बचता ।)

इस प्रकार नय प्रमाण से भिन्न भी है और अभिन्न भी । बृहत् स्वयंभू स्तोत्र में लिखा है –

अनेकान्तोऽप्यनेकान्तः, प्रमाण नय साधनः।

अनेकान्तः प्रमाणान्ते, तदेकान्तोऽर्पितान्नयात् ॥

प्रमाण का विषय होने पर जो अनेकान्त है, नय का विषय होने पर वही एकान्त है । इससे सिद्ध होता है कि 'अनेकान्त' पर भी यह अनेकान्त लागू होता है ।

यही बताने के लिए ऊपर प्रमाण और नय का उल्लेख किया गया है ।

अनेकान्तवाद सर्व व्यापी है । यह समाज को एक सूत्र में पिरोने का साधन है । इसीलिए एक अनेकान्त महर्षि ने लिखा है –

जेण विणा लोगस्स वि, ववहारो सव्वहा न निव्वडइ ।

तस्स भुवणेक्कगुरुणो, णमो अणेगन्तवायस्स ॥

यह अनेकान्तवाद तीनों लोकों का गुरु है । इसके बिना लोक-व्यवहार बिल्कुल नहीं चल सकता । अतः त्रिभुवन के एक मात्र गुरु इस अनेकान्तवाद को मेरा नमस्कार हो । [समाप्त]

प्रेरक प्रसंग :

छत्रपति शिवाजी एवं संत तुकाराम

श्री गदाधर भट्ट

"महाराज छत्रपति शिवाजी आपके दर्शनों की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे हैं।" सेनापति ने साष्टांग नमस्कार कर विनम्र निवेदन किया। महाराज शिवाजी ने सेनापति के साथ विशाल सेना, गज, अश्व, सेवक, पालकी आदि भेजे हैं—"संत को जो वाहन प्रिय हो उसी वाहन से वे पधार कर शिवाजी महाराज को अनुग्रहीत करें," —ऐसा महाराज ने पुनः निवेदन किया है। विनम्रता से सेनापति ने संत तुकाराम को महाराज के आदेश एवं निवेदन से अवगत कराया।

संत तुकाराम भक्ति, वैराग्य एवं धर्म-परायणता की प्रतिमुर्ति थे। सेनापति के निवेदन पर वे किंचित् मुस्कराए। संत बोले, 'मुझे जाना ही है तो प्रभु ने मुझे दो पैर देकर बड़ी कृपा की है। छत्रपति शिवाजी महाराज को मेरी ओर से निवेदन करें, मैं श्री विठ्ठल प्रभु की सेवा में मग्न हूं अतः यहां रहकर अभंग संकीर्तन करने की अनुमति देकर मुझे कृतार्थ करें, मैं छत्रपति महाराज के लिए प्रभु से मंगल, यशदीघार्यु की कामना करता हूं।"

निराश सेनापति वापस लौट गया। सेनापति एवं राजसीवैभव ठुकराने पर पंढ़रपुर के लोग संत तुकाराम को भला-बुरा कहने लगे। संत बड़े अभिमानी एवं अज्ञानी हैं, उन्होंने महाराज छत्रपति का तिरस्कार कर अच्छा काम नहीं किया।

छत्रपति शिवाजी को सेनापति द्वारा संत का संदेश मिला तो वे स्वयं संत के दर्शनों के लिए पंढ़रपुर आ गए। संत को प्रणाम निवेदन कर छत्रपति शिवाजी ने अपार स्वर्ण मुद्राएं उनके चरणों में अर्पित कर दी।

संत तुकाराम ने कहा, "महाराज, आप ब्राह्मणों के रक्षक हैं, मुझे माया (धन) के बन्धनों में न बांधे, माया तो भक्ति में बाधक है। आप कृपा कर स्वर्ण मुद्राएं लौटा ले जावें। लोक कल्याण में इस अनन्त धन राशि का उपयोग कीजिए।"

धन्य है, संत तुकाराम जैसे निःस्पृह संत! पंढ़रपुर में संत अत्यन्त निर्लिप्त भाव से जीवन-यापन कर रहे थे। घर नाम पर टूटी सी झोपड़ी थी, जीर्ण शीर्ण वस्त्र काया की लाज को ढ़कने के आवरण थे। भिक्षा उनके जीवन-निर्वाह का एक मात्र साधन थी। बेजोड़ हैं ऐसे संत, जो अकिंचन होकर प्रभु के प्रति अनन्य भक्ति को संकीर्तन के माध्यम से अत्यन्त दृढ़ कर रहे थे।

छत्रपति शिवाजी महाराज संतवाणी को सुनकर भाव-विह्वल हो गए तथा जीवन पर्यन्त संत तुकाराम के शिष्य एवं भक्त बन गए।

महाराष्ट्र में संत तुकाराम के मुख से भगवत् गुण-ज्ञान की जो धारा प्रवाहित हुई है, वह "अभंग" के नाम से प्रसिद्ध है। संत तुकाराम के अभंगों में ज्ञान-भक्ति का अद्भुत समन्वय है। संत तुकाराम के अभंग महाराष्ट्र में सर्वाधिक प्रिय एवं प्रसिद्ध हैं एवं भक्तजनों के कंठ के हार हैं।

वर्तमान में महावीर के सिद्धान्तों की प्रासंगिकता

– कु. चेतना मेहता (झाबुआ)

भगवान महावीर उस दैदीप्यमान सूर्य की भाँति आज भी प्रकाशित तेजस्वी है। इन्होने अपने ज्ञान, दर्शन एवं चरित्र रुपी सहस्त्रों किरणों से सम्पूर्ण लोक को आलोकित किया है। भगवान महावीर के द्वारा प्रतिपादित एक एक सिद्धान्त मानो मणियों की भाँति प्रस्फुटित होकर अनगिनत भक्तों के हृदय में नव जागृती, नव चेतना का संचार करते है।

आज से लगभग २५१९ वर्ष पूर्व माता त्रिशला के गर्भ से एक अत्यन्त ही तेजस्वी, वीरवान, सुन्दर बालक का जन्म हुआ था। इस बालक का नाम वर्धमान रखा गया। ३० वर्ष की अल्पायु में उन्होंने दीक्षा ग्रहण की और घोर तपस्या कर कर्मों का क्षय करके कार्तिक वदी अमावास्या के दिन पावापुरी से निर्वाण पधारे थे।

प्रत्येक महापुरूष चाहे वह किसी भी युग में पैदा हुआ हो किंतु उसके द्वारा बनाये गए सिद्धान्तों की प्रासंगिकता प्रत्येक काल में रहती है, क्योंकि महापुरूषों की वाणी तो दिव्य अमिट और ऐसी तेजस्वी होती है कि जिसके प्रकाश से अनेक पथ भ्रष्ट आत्माओं को एक नई दिशा मिलती है।

महावीर के सिद्धान्तो की वर्तमान में उतनी ही प्रासंगिकता है जितनी कि उस युग में थी। भगवान महावीर का मूल सिद्धान्त था **'जियो और जिने दो'**। महावीर के अनुसार प्राणिमात्र का कल्याण इसी में है कि वह स्वयं भी शांति-पूर्वक जीवन यापन करे और अन्य सभी जीवों पर भी समता भाव व दया की दृष्टि रखे।

वर्तमान में सम्पूर्ण विश्व में हिंसा के काले बादल चहुँ ओर मंडरा रहे हैं आज हमारे देश के अधिकांश भागों में हमें भय, आतंक और हिंसा ही हिंसा दिखाई देती है। आज मनुष्य इतना हिंसक प्रवृत्ति का होता जा रहा है कि उसकी स्थिती पशु से भी बदतर होती जा रही है। आज मनुष्य मनुष्य का ही दुश्मन होता जा रहा है। एक भाई ही अपने दूसरे भाई के खून का प्यासा बन बैठा है। किंतु आज हमें अवश्यकता है महावीर के सिद्धान्तों अहिंसा, सत्य, दया, अपरिग्रह की। वर्तमान में मनुष्य को वैसी ही आवश्यकता है जैसी कि एक प्यासे को पानी की, भूखे को रोटी की। आज मनुष्य महावीर के बनाये हुए मार्ग का अनुसरण कर ले तो वर्तमान में व्याप्त भीषण समस्याओं का हल स्वतः ही हो जायेगा।

वर्तमान में देश अनेक समस्याओं से घिरा हुआ है– आतंकवाद की समस्या, साम्प्रदायिकता की समस्या वर्तमान में विद्यमान है। इन सब समस्याओं का समाधान हो सकता है अगर हम महावीर के बताये हुए मार्ग पर चलें।

महावीर ने अहिंसा के साथ-साथ साम्प्रदायिकता का भी विरोध किया और उनकी दृष्टि में तो प्राणी मात्र चाहे वह कोई भी हो एक समान है तो फिर हिन्दु, मुस्लिम, सिख,

ईसाई ये तो सब इन्सान है इन्हे तो आपस में भाई-भाई की तरह रहना चाहिए क्योंकि मानव को मानव के प्रति प्रेम पूर्वक रहना यही तो मानवता है। तो यदि मानव में मानवता नहीं होगी तो वह मानव नहीं पशु होगा।

वर्तमान में मानव की असीमित आकांक्षाएँ और उपभोग की तीव्र प्रवृत्ति के फलस्वरूप ही अप्रत्यक्ष रूप में अनेक समस्याएँ जैसे– मूल्य वृद्धि की समस्या इत्यादि दिन प्रति दिन बढ़ती चली जा रही है और इसी कारण मनुष्य धन कमाने की तीव्र इच्छा के कारण अनीति का मार्ग अपना लेता है किंतु इसका भी समाधान हो सकता है अगर महावीर द्वारा बनाये अपरिग्रह के सिद्धान्त को अपना लिया जाय।

मनुष्य को यह मानव जीवन बहुत ही दुर्लभता से मिला है इसलिए इस व्यर्थ के कार्यो– अनैतिकता, हिंसा, प्रमाद में मिथ्या नहीं गँवाना चाहिए। उसे अपनी जिंदगी में ऐसे कार्य करना चाहिए जिससे कि उसका यह मनुष्य जन्म सार्थक हो जाय।

इस प्रकार से वर्तमान में महावीर के बताये हुए सिद्धान्तों को ग्रहण करने की, उस पर चलने की आवश्यकता है। केवल महावीर के गुण गाने से या महावीर जयन्ती मना लेने से हम महावीर के सच्चे भक्त नहीं हो जाते हैं। महावीर जयन्ती मनाने की सच्ची सार्थकता तो तभी होगी जब कि हम उनके बताये हुए मार्ग पर चलें तभी हमारा जीवन सार्थक होगा। और वर्तमान में व्याप्त सभी समस्याओं का हल हो सकेगा। इस प्रकार महावीर के सिद्धान्तो की वर्तमान में अत्यन्त आवश्यकता है और आज व आनेवाले कल मे भी महावीर के सिद्धान्त पूर्ण रूप से प्रासंगिक होंगे।

१ मार्च से ३१ मार्च १९९३ तक शाश्वत धर्म के बनाए गए सदस्यों की सूची

सदस्य बनाने वाले का नाम	बीस वर्षीय	दस वर्षीय	तीन वर्षीय	कुल सदस्य
कार्यालय - थाने	२	२	२	६
श्री मनसुखलाल पी. खींचा - थाने	--	१	--	१
श्री हस्तीमलजी बागरेचा - हैद्राबाद	--	५	--	५
श्री पारसमलजी एच. सेठीया - नीमच	--	--	५	५
श्री सुरेन्द्रजी लोढ़ा - मन्दसौर	--	--	१	१
श्री उत्तमचंदजी डामरानी - दिल्ली	--	--	१	१
श्री अशोक श्रीश्रीमाल - टाण्डा	--	--	१	१
	२	८	१०	२०

शाश्वत धर्म के ग्राहक बनाकर सम्यग्ज्ञान के प्रचार-प्रसार में सहयोग दीजिये।

महावीर और हम

मुनि श्री तरूणसागरजी

हे महावीर!
तुम थे परम वितरागी,
और हम है
परम वित्तरागी।
***

मेरे महावीर!
तुमने भोग को बताया
आधि-व्याधि
और हम बता रहे है
संभोग से समाधि।
***

मेरे महावीर!
तुमने जीवन भर
त्याग के गुण गाए,
आयु के तीन चौथाई क्षण
त्यागमय बिताए,
और आज भी तुम्हारे प्रतिनिधि ग्रन्थ
'त्याग ही जीवन है' बता रहे हैं
और हम
'त्याग को जड़ की क्रिया' कह
त्याग से जी चुरा रहे हैं;
आलू तो आलू
अंडे तक खा रहे हैं
***

तुमने जनता-जनार्दन के नाम
संदेश मे कहा -
'जिओ और जीने दो'
और हम कह रहे हैं
पिओ और पीने दो।
***

विपुलाचल पर बैठ
तुमने एक बार कहा था
'आवश्यकता से अधिक संग्रह करना
- पाप है,
हम समझे श्रमणों के लिए
हम श्रावकों को तो सब माफ है।
***

मेरे महावीर
तुम थे परम वैज्ञानिक
तभी तो कहा था
पानी में अनंत जीव है,
अतः पानी छानकर पिओ,
औरों को भी जीने दो
और खुद भी जिओ,
हे प्रभु!
हम तुम्हारे इस वैज्ञानिक दृष्टिकोण से
पूर्ण सहमत है,
और इसके अनुरूप ही जीवन
जी रहे है,
पानी तो पानी
शराब तक छानकर पी रहे हैं।
***

हे महावीर
जिस क्षण तुम्हारे मन में
वैराग्य उपजा
पल भर में छोड़े
सब आडम्बर;
और हो गये दिगम्बर
तुम्हारे तन पर वस्त्र की
एक चिंदी तक नहीं थी
पर आज हम
तुम्हारे नाम पर
'महावीर वस्त्र भंडार' खोल रहे हैं
और तुम्हारी जय-ज़यकार बोल रहे हैं
***

तुम्हारे सर्वोदय तीर्थ में
सभी का उदय था
हर प्राणी पूर्ण स्वतंत्र और अभय था
पर आज हम निजोदय को छोडकर
किसी का उदय होने नहीं देते
कोई उठे/चमके/आगे बढ़े
उससे पहले ही टांग खींच लेते है।
***

हे महावीर!
तुमने अपने पांचों ही नाम
सार्थक कर डाले
जो व्रत लिए
'वीर-महावीर' की तरह पाले
और हम अपने एक ही नाम को
सार्थक नहीं कर पा रहे है

हम आंखों से अंधे हैं
पर नयनसुखदास के नाम से
जाने जा रहे हैं
'महावीर के भक्त' हैं
पर चूहे से भय खा रहे हैं।
***

हे महावीर!
तुम जीवन भर
सत्य के लिए जिए
सत्य के लिए मरे
और हम
सत्य की कसम खाकर
हर पल झूठ पी रहे हैं
मेरे महावीर! हम तुम्हें नहीं
'सत्य घोष' को जी रहे हैं।

शाश्वत धर्म को भेंट

५०१/- त्रिशुल आटोमोबाईल्स काकीनाड़ा की ओर से मुमुक्षु अरविन्दा बहन की दीक्षा निमित्ते।

३०१/- शा. सेवंतीलाल बादरमल वोहरा अहमदावाद की ओर से चातुर्मास में मासक्षमण निमित्ते।

१०१/- सियाणा निवासी शा. छगनराजजी मुथा की ओर से गुरू सप्तमी आयोजन निमित्ते।

१०१/- राजमहेन्द्री निवासी शा. कांतिलालजी (राजेन्द्र इन्व्हेसमेंटस) की ओर से नूतन गृह प्रवेश निमित्ते।

१०१/- दोषी सरूपचंद भागचंद दूद्वारा की ओर से मुनिराज श्री चारित्ररत्नविजयजी म. सा. की बड़ी दीक्षा निमित्ते।

१०१/- केन्द्रीय कार्यकारिणी के सदस्य श्री कन्हैयालालजी सेठिया के पौत्र एवं पौत्री तथा श्री नवीनचंद्रजी सेठिया के पुत्र चि. प्रमोद एवं पुत्री चि. सीमाकुमारी के विवाहोपलक्ष निमित्ते।

५०/- पू. साध्वी श्री महाप्रभाश्रीजी डा. श्री प्रियदर्शनाश्रीजी एवं डा. श्री सुदर्शनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की प्रेरणा से शा. देवीचंदजी छगनलालजी भीनमाल द्वारा सप्रेम भेट।

५०/- श्री अरिहंत जैन प्राणी कल्याण संस्था (हस्ते अध्यक्ष - श्री देवकुमार के. जैन) बैंगलोर द्वारा सप्रेम...।

श्री पार्श्वनाथ जिन स्तवन (२३)

(लीला करी घरे आवीयो...... ए राह)

विवेचन : श्री जयानंदविजयजी म.

पार्श्व पति ने पूजिये, लहिये अनंती लीला रे ।
राग भावे लीला रही, ते तजीये सुमती हीलारे । पार्श्व. ॥ १ ॥

श्री पार्श्वनाथ भगवंत की सेवा, पूजा, एवं आज्ञा पालन द्वारा शिव सुख की अनंत काल तक की लीला प्राप्त हो जाती है ।

पर जो राग भाव की लीला है वह सुमति सद्-बुद्धि के द्वारा दूर कर देनी चाहिये ।

कुमति कदाग्रह कारिणी, दुरमति दूर दमी जे रे ।
शाश्वता सुख संपजे, रचना एहवी रचीजेरे । पार्श्व. ॥ २ ॥

गुरुदेवश्री कहते हैं कि कुमति कदाग्रह करने वाली है उस कुमति का दूसरा नाम दुर्मति भी है उसे दमन कर दूर करना है । जब कुमति दूर होगी तब शाश्वत सुख प्राप्त होगा । हमारी रचना अर्थात् क्रिया ऐसी होनी चाहिये कि जिस क्रिया में कदाग्रह का नामोनिशान न हो । कदाग्रह रहित क्रिया से ही मुक्ति सुख की प्राप्ति होगी ।

मन छे चंचल मांकड़ो, हाथ न आवे एह रे ।
वामा सुत ने वंदता, वश हुवे वंको जेह रे । पार्श्व. । ३ ।

सर्व प्रथम कदाग्रह की भावना मन में उत्पन्न होती है और मन तो बंदर समान चंचल है । सहजता से मन हाथ में नहीं आता अर्थात् सहजता से मन पर काबु नहीं आता । पर वामा सुत पार्श्व जिणंदजी को वंदना करने से यह बंदर रूपी मन वश में आ जाता है । मन पर नियंत्रण होने से कुमति कदाग्रह को सहजता से दूर किया जा सकता है ।

मत मत पक्ष न मांचीये, राची जे आतम रंगे रे ।
सिद्धि तेहथी संपजे, वरजिये चित्त विभंग रे । पार्श्व. ॥ ४ ॥

कदाग्रह युक्त माताग्रह के पक्ष में आनंद न मान कर, आतम शुद्धि रूप रंग में आनंद मानने का गुरुदेवश्रीने कहा है । अर्थात् जिस क्रिया के द्वारा आत्मा शुद्ध बनता है उस क्रिया में आनंद मानो । उसी क्रिया से सिद्धि होगी । सिद्ध संपत्ति उसी से मिलेगी । अतः चित्त में विभ्रम पैदा करे ऐसी क्रिया का त्याग करना चाहिये । मिथ्या क्रिया का त्याग कर सम्यग् क्रिया का आचरण करनेवाले को –

सम्यक् श्रद्धा संपत्ति, अश्वसेन सुत आपे रे ।
राजेन्द्र पद थी रंग में, शूरवीर समप्पे रे । पार्श्व. । ॥ ५ ॥

अश्वसेन सुत श्री पार्श्वनाथजी मोहराय जैसे प्रबल शत्रु को हराने से शूरवीर हैं, जो राज राजेन्द्र पद अर्थात् मोक्ष पद में आत्मानंद रूप रंग में रमण कर रहे हैं वे सम्यक् श्रद्धा, सम्यग्ज्ञान, सम्यक् चारित्र रूप संपत्ति देते हैं ।

गुरुदेवश्री ने इस स्तवन में कुमति कदाग्रह दूर करने हेतु मन पर नियंत्रण लाने का कह कर मत पक्ष में आनंद न मान कर आत्मानंद प्राप्ति में सहायक क्रिया में आनंद मानने का कहा है । और वैसी सम्यग क्रिया करनेवालों को श्री पार्श्वनाथजी सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र दे देते हैं । अर्थात् कदाग्रह को छोडने वाला, मोक्ष पद को, मोक्ष पद के मार्ग को प्राप्त कर सकता है, यह दर्शाया है,

आप तो मानव है!

मैं बिल्लियों से नहीं कहता,
कि 'तुम चूहे खाना छोड़ दो',
बगुलों को भी नहीं कहता
कि 'मछलियाँ खाना छोड़ दो',
न ही गिदड़ों व भेड़ियों से
ऐसा कुछ कहता हूँ,
भला जानवरों से क्या कहना?
लेकिन आप तो मानव है न,
मांस तो मानव का
आहार ही नहीं है,
मांसाहार
अप्राकृतिक है,
असात्विक है,
अमानवीय है,
असांस्कृतिक है,
अधार्मिक है,
अनैतिक है,
अवैज्ञानिक है,
असंवैधानिक है,
अस्वास्थ्यकर है,
क्रूरतापूर्ण और
वर्जनीय है,
अतः हे मनुज पुत्रों!
मांसाहार छोड़ दो,
अपने आप को,
पवित्रता व
मनुष्यता से जोड़ दो॥

— श्री दिलीप धींग 'बम्बोरा'

महावीर गौतम के देश में

महावीर, गौतम के देश में
हिंसा की यह क्रूरता।
अमानवीय कृत्यों की बर्बरता।
विदेशी मुद्रा प्राप्ति का बता आधार।
कर रही भारत सरकार घिनौना व्यापार।
सिर्फ कानून का ले सहारा।
'जीओ और जीने दो' का भूल कर नारा।
ले रहे असंख्य निरीह,
मूक पशुओं की जानें।
भारत के ये पशुवध कत्लखाने।
अहिंसा प्रेमियों सोचो! सोचो!!
यह निष्ठुरता की पराकाष्ठा है।
क्या यही अहिंसा और मानवता के
प्रति हमारी निष्ठा है?
हमने अर्थ संवरण में
इंसानियत को ही भूला डाला है।
जो अहिंसा की हमारी संस्कृति पर
कलंक काला है।

– श्री जगदीप "हर्षदर्शी" – उदयपुर

दुःख बाहर से नहीं आता, दुःख के बीज हमारी आत्मा में ही पड़े है। उनको उखाड़ कर फैंक दो। फिर दुःख पैदा ही नही होंगे। दुःख के बीज हैं - क्रोध, मान, माया और लोभ। ये बीज नहीं तो दुःख भी नहीं।

क्या आप जानते हैं कि...

- अपने देश में हर साल सडक दुर्घटनाओं में ६० हजार लोगों की मौतें होती है। इसकी वजह खराब सड़कें, यातायात नियमों की समझ में कमी, पैदल चलने वालों की ओर से नियमों की उपेक्षा, नशे का प्रयोग, वाहन चालकों का उचित प्रशिक्षण न होना और वाहनों की भरमार है।
- देशभर के आर. टी. ओ. दफ्तरों में इस वक्त करीबन दो करोड़ वाहनों का पंजीयन है, जिसमें अकेले ३२ प्रतिशत वाहन केवल १२ महानगरों में केन्द्रित हैं।
- वसों व ट्र[illegible] के कारण देश में कुल ४५ प्रतिशत दुर्घटनायें होती है।
- अंतरराष्ट्री[illegible]म संस्थान की एक रिपोर्ट के अनुसार दुर्घटना अथवा काम से संवंधित स्थायी रोगों के कारण प्रति मिनट में एक मजदूर की मृत्यु होती है तथा १४ मजदूर स्थाई रूप से विकलांग हो जाते हैं। इसके अलावा प्रति सेकेण्ड ४ मजदूर घायल भी होते है।
- सफदरगंज अस्पताल के न्यूरोलॉजी विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर डी. सी. जैन ने अनेक वैज्ञानिक प्रमाणों से यह सिद्ध किया कि शाकाहार से तन पर ही नहीं मन पर भी अच्छा असर पड़ता है।
- शाकाहार के प्रसार से कृषि के वर्तमान उत्पादन-स्तर पर अब से आठ से दस गुना तक आवादी को पाला जा सकता है। पश्चिमी देश लाखों करोड़ों टन अनाज जानवरों को मांस-के-लिए-मोटा करने में खपा रहे हैं। एक किलो मांस-प्रोटीन पैदा करने के लिए पशुओं को ७-८ किलो वनस्पति-प्रोटीन और कैलोरी उर्जा के लिए सात कैलोरी उर्जा प्रदान करनेवाला अनाज खिलाना पड़ता है।
- एक गाय गोमांस के लिए इस्तेमाल की जाए तो हजार लोगों का भी पेट नहीं भरेगा, लेकिन इसी गाय का दूध इस्तेमाल किया जाए तो हर रोज औसतन १० कि. ग्रा. दूध देकर १५ वर्ष के दुग्धकाल में ९० हजार व्यक्तियों को दूध जैसा पौष्टिक आहार उपलब्ध करा सकती है।
- एक बैल अपने जीवन-काल में लगभग ४० हजार किलोग्राम अनाज पैदा करने में मदद करता हैं, जिस पर ६० हजार लोग पल सकते हैं। इन पशुओं का गोबर खाद और जलाऊ गैस बनाने के काम आता है और ये सस्ता परिवहन भी सुलभ कराते हैं।
- विश्व शाकाहार-सम्मेलन ने संयुक्त राष्ट्र से अपील की है कि सन् १९९५ को "शाकाहार-वर्ष" घोषित किया जाए।
- वैज्ञानिक प्रयोगों से भी यह सिद्ध हो चुका है कि शाकाहार-विश्व में अहिंसा और शान्ति का प्रसार करेगा और मानव को अधिक स्वस्थ और रोग-मुक्त रखकर जीवन को अधिक आनन्दमय बनायेगा।
- अमरिकी हर साल १२० किलोग्राम मांस खा जाता है, जिसे पैदा करने में १००० किलोग्राम अनाज पशुओं को खिलाना पड़ता है। अगर यही अमरिकी केवल शाकाहार ले तो आठ और लोगों का पेट भरा जा सकता है।

- **धर्ममित्र**

महावीर प्रभु

रचयिता - श्री भँवरलाल एम. जैन शिवगंज (बम्बई)

सिंहासन डोल उठा, वीर जन्म की बात जानी थी
छप्पनदीक कुमारिका तो नृत्य में दिवानी थी
मेरु पर अभिषेक हुआ वो देव टोली मस्तानी थी
त्रीलोक में आनन्द की छाई अजब जवानी थी

पचीस सो एकाणु वर्ष पहले वो लाल ने जन्म लिया
जिस धर्म का प्रचार किया वो जैन धरम लिया
संसार रूपी मायाजाल पर प्रभु ने शरम किया
जग के उद्धारक बने ऐसा प्रभु ने करम किया

यज्ञ करते बड़े-बड़े यहीं ब्राह्मणों के हाल थे
होम होता देख अपना पशु-गण भी बेहाल थे
हिंसा को समझते धर्म पापों से भरे गाल थे
अहिंसा का मंत्र सुनाया वो करोड़ों के पशुपाल थे

क्षत्रिय कुण्ड में जन्में वो वैशाली नगरी अलबेली थी
तीर्थंकर पुत्र को पाया वो त्रीशला नार नवेली थी
जिस धर में बिता बचपन वो सिद्धार्थ की हवेली थी
बालपण की लीला प्रभु की सब अजब पहेली थी

तीस वर्ष की भर जवानी, प्रभु ने संयम लिया
हँसते-हँसते उपसर्गों को प्रभु ने सहन किया
आखिर केवल ज्ञान पाया झुका अष्ट करम लिया
शिष्या में चन्दना, शिष्यों में गौतम प्रथम लिया

गांव-गांव, नगर-नगर, में प्रभु ने विहार किया
अमृत-वाणी पाने लाखों भक्तों ने इन्तजार किया
दुःख में डूबे भव में डूबे भव्यों का उद्धार किया
वीर से ही चंड कौशिक ने तीर्यन्च का भव पार किया

अंतिम देशना पावापुरी की ४८ पहर उच्चार किया
नंदिवर्धन तो क्या गौतम ने भी चित्कार किया
जहां बनाई समाधी वहां दीपो का कतार किया
"भँवर" भक्ति-भाव से वीर का जय-जयकार किया

रूकिये ! पढिये !! सोचिये !!!

☛ दवायें खरीदते वक्त उसका बिल अवश्य लेवें। आजकल कई फार्मेसियों द्वारा घटिया स्तर की या डुप्लीकेट दवाईयाँ बेचने के कई किस्से प्रकाश में आये हैं। मौत के सौदागरों की इन गन्दी हरकतों के कारण् कई दर्दीयों को लाभ के बदले नुकसान या अकाल मौतें भी हुयी है।

☛ मुंह से दुर्गन्ध न आये इसलिये पानमसाला, इलायची, लविंग इत्यादि सुगंधी द्रव्यों के इस्तेमाल की अपेक्षा व्यवस्थित दंतमंजन एवं खान-पान में विवेक रखें तो यह समस्या हल हो जाये।

☛ हिन्दुस्थान आर्गेनिक केमिकल लि. रसायनी के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री वी.के. औंधे ने कहा कि घातक रसायनों के उपयोग में दिनोंदिन होनेवाली वृद्धि से मजदूरों और जनता में होनेवाली बिमारियों में आश्चर्यजनक वृद्धि हुयी है।

☛ हमारे आहार पर फास्टफूड, प्रोसेस्ड (संसाधित खाद्य) का हमला हुआ है। क्रूरता, हिंसा और मिलावट ने भारतीय आहार की मौलिकता, सत्व और विश्वसनीयता को तहस-नहस कर दिया है।

☛ हमारे आचार पर अन्धानुकरण, फैशन, फरेब, झूठी शान, हिंसा, स्वार्थ, क्रूरता, भ्रष्टता आदि का आक्रमण हुआ है।

☛ हमारे विचारों पर अतीत की उपेक्षा, संस्कारशून्यता, व्यापारिकता, औपचारिकता, स्वार्थान्धता, राजनैतिक धूर्तता आदि ने हमला बोल दिया है।

☛ देश में ब्रिटेन और अमेरिका की फास्टफूड (तुरता खाद्य) कम्पनियों को जिस तरह हरी झण्डी दी जा रही है, उसे देखते यह सुनिश्चित है कि आहार का मसला भारतवासिय़ों को अपने हाथ में लेना होगा और पूरे देश में एक शक्तिशाली आन्दोलन की शुरूआत करनी होगी। अब तक चुप्पी साधने के जो नुकसान हुए हैं वे सामने हैं और देश में हिंसा तथा क्रूरता की घातक श्रृंखला ने अपने पाँव दृढ़ता से जमा लिये हैं।

☛ एक जमाना था जब ऐसे राजनेता रेलमंत्री थे जो ड्राइवर की गलती से हुई रेल दुर्घटना की नैतिक जिम्मेदारी अपने उपर ले इस्तीफा देने का साहस रखते थे। एक जमाना आज है जब राजनेता यह स्वीकार करने को राजी तक नहीं है कि राजनीति में नैतिक मूल्यों का कोई वास्ता है या होना चाहिये।

☛ कानून के रखवाले, नियम बनाने वाले, अनुशासन स्थापित करने वाले नैतिक मूल्यों की दुहाई देनेवाले राजनीतिकों की कथनी और करनी में यदि अंतर बढ़ता चला गया (जैसा कि आज हो रहा है) तो एक अरसे के बाद वह भयावह स्थिति उत्पन्न हो जायेगी जब हम कानून और अपराध, अनुशासन और उद्दंडता, नैतिकता और निकृष्टता में भेद भी नहीं कर पायेंगे। – **मुसाफिर**

संत-समागम

दूध में थोड़ी सी छाछ की बूंदें
डालने से, वह दूध
दही में बदल जाता है,
परन्तु उसी दूध में
नींबू का रस डाला जाय तो
दूध ही फट जाता है।
बस !
दूध के समान अपना जीवन है।
जीवन में सत्पुरूषों का समागम हो जाय
तो
जीवन-बाग नंदन-वन बन जाएगा
और
दुर्जनों के संग में चले गए तो
अपना जीवन ही
बर्बाद हो जाएगा।
सावधान !
खराब सौबत से
सदैव दूर रहना।

प्रकृति की प्रेरणा

वृक्ष पर कोई पत्थर फेंकता है तो
वह फल देता है।
चंदन को कोई घिसता है तो उसे
वह सुगंध देता है।
दीपक को कोई जलाता है तो
वह प्रकाश देता है।
बादल ऊपर उठकर भी
अनेकों की प्यास बुझाता है।
सारा प्रकृति-मंडल
परोपकार की मूक-प्रेरणा दे रहा है।
हे मानव !
तू क्या उस वृक्ष, चंदन, दीपक व बादल
से भी
हीन है ?
परोपकार तेरे जीवन का
मंत्र होना चाहिये।
परोपकार ही
अपना जीवन-व्यसन
होना चाहिये।

महावीर-वाणी

- आत्मा ही सुख दुःख का कर्ता और भोक्ता है। सदाचार में प्रवृत्त आत्मा मित्र के तुल्य है, और दुराचार में प्रवृत्त होने पर वही शत्रु है।

- जो पूजा-प्रशंसा सुनकर कभी अहंकार नहीं करता और निन्दा सुनकर स्वयं को हीन (अवनत) नहीं मानता, वही वस्तुत महर्षि है।

– मधुकर

सरेराह चलते-चलते ...

* **एक मंत्री का खर्च एक करोड** - सन १९९२-९३ के बजट में केन्द्रिय मंत्रियों के पर्यटन खर्च के लिये साढे पांच करोड रूपये का प्रावधान किया गया था किन्तु इस वर्ष वास्तविक खर्च प्रावधान से कई गुना ज्यादा अर्थात् पैंतीस करोड रूपये हुआ। इनमें इनके पगार, भत्ते, सुरक्षा खर्च इत्यादि जोड़ा जाये तो कुल खर्च पचास करोड़ से भी अधिक हो जाता है। अर्थात् केन्द्रीय मंत्रिमंडल के लगभग पचास मंत्रियों के पीछे देश की पचास करोड से ज्यादा राशि खर्च हो जाती है यानी कि एक केन्द्रीय मंत्री को पालने के लिये देश की आम जनता को अपनी जेब से प्रतिवर्ष एक करोड़ रूपये देने पड़ते हैं।

* **भाववृद्धि में रासायनिक खाद का योगदान** - गत ४५ सालों में गेहूं के भावों में १२००, दालों में १६००, बाजरे में १६०० और चावल में १५०० प्रतिशत की वृद्धि हुई। इस भाव वृद्धि के कारण बहुत स्पष्ट है। पुराने कत्लखानों का आधुनिकीकरण हुआ तथा नये यान्त्रिक कत्लखाने खोले गये फलस्वरूप किसान मुफ्त में मिलने वाली गोबर-खाद से वंचित हुआ और उसे महंगी रासायनिक खादों का उपयोग करना पड़ा।

* **राजनेता और नैतिकता** - राजनीति में हर राजनेता कदम-कदम पर नैतिकता की दुहाई देता नहीं अघाता, नैतिकता की वकालत करते-करते उसका गला सुख जाता है परन्तु जब इन्हीं नैतिक मूल्यों की बदौलत उसे अपनी कुर्सी खतरे में दिखाई देती है, मानो उसे साप सूंघ जाता है, यह विडंबना ही है।

* **नमक भी बहुराष्ट्रीय कम्पनी बनायेगी** - कारगिल नामक एक अमेरीकी बहुराष्ट्रीय कम्पनी है जो हमारे देश में नमक बनायेगी। कांडला बंदरगाह के एक द्वीप का एक हिस्सा उस कम्पनी को दिया जा रहा है। पहले विदेश से कुछ बनी बनाई चीज आयात करते थे, फिर टेक्नालॉजी का आयात हुआ, अब नमक भी बनवाना शुरू करनेवाले हैं। हमारी सरकार न जाने कैसा भारत बनाने जा रही है?

* **विदेशी कर्जों का चक्रव्यूह** - भारत को इस समय निर्यात से जितनी विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है उसका एक तिहाई भाग विदेशी कर्जों के मूल और व्याज की अदायगी में खप जाता है और जो शेष बचता है वह आयात व्यापार के भुगतान के लिए आवश्यक विदेशी मुद्रा के आधे से भी कम होता है, अतः कर्ज लेने पडते हैं और कर्जों से विदेशी देनदारी बढ़ती है। क्या स्वदेशी अपना कर आयात कम कर हम इस चक्रव्यूह से नहीं निकल सकते? लेकिन हमारे नेताओं को विदेश घूमने और निजी हवाईजहाजों में बार-बार घूमने को कैसे मिलेगा?

- प्रवासी

ज्ञान कसौटी - २२

संकलन - महेन्द्र जे. संघवी - थाने

(स्वाध्यायी पाठक निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर पहले क्रमशः एक कागज पर लिखे फिर इसी अंक में पृष्ठ ३८ पर दिये गए उत्तरों से तुलना करें। - **सम्पादक**)

५२६) भगवान महावीर की जन्मस्थली कहाँ है?
५२७) भगवान महावीर गृहस्थावस्था में कितने वर्ष रहे?
५२८) भगवान महावीर का साधना काल कितना?
५२९) भगवान महावीर के मोक्ष जाने के पश्चात मोक्षमार्ग कितने पाट चला?
५३०) भगवान महावीर के शासन में प्रथम पट्टधर कौन हुए?
५३१) भगवान महावीर को केवल ज्ञान कहां प्राप्त हुआ?
५३२) भगवान महावीर ने चतुर्विध संघ की स्थापना कब की?
५३३) भगवान महावीर के चतुर्विध संघ में साधुओं की संख्या?
५३४) भगवान महावीर के चतुर्विध संघ में साध्वियों की संख्या?
५३५) भगवान महावीर के चतुर्विध संघ में श्रावकों की संख्या?
५३६) भगवान महावीर के चतुर्विध संघ में श्राविकाओं की संख्या?
५३७) भगवान महावीर ने सबसे अधिक चातुर्मास कहां किये?
५३८) भगवान महावीर को शीतोपसर्ग किसने दिया था?
५३९) भगवान महावीर को संगमदेव द्वारा एक रात्री में कहां व कितने उपसर्ग दिये गए थे?
५४०) भगवान महावीर का वर्ण एवं लंछन क्या है?
५४१) भगवान महावीर के कितने वर्ष बाद आगम पुस्तकारूढ हुए?
५४२) भगवान महावीर के कितने भव थे?
५४३) भगवान महावीर के भव की गणना कब से मानी गई है?
५४४) भगवान महावीर के प्रथम शिष्य कौन थे?
५४५) भगवान महावीर ने दीक्षा पर्याय में कुल कितने चातुर्मास किये?
५४६) भगवान महावीर के ज्येष्ठ भ्राता का नाम?
५४७) भगवान महावीर पर तेजोलेश्या का उपद्रव कहां व किसने किया था?
५४८) भगवान महावीर के संघ में चौदह पूर्वधारी कितने मुनि हुए?
५४९) भगवान महावीर के द्वारा लिये गए पांच अभिग्रह किस के द्वारा पूर्ण हुए?
५५०) भगवान महावीर की निर्वाण स्थली?

शाश्वत धर्म के ग्राहक बनकर सम्यग्ज्ञान का प्रसार करें

कुछ उपयोगी घरेलू नुस्खे

मुंह में छाले होने पर :

- रात को सोते समय छालों पर घी लगाकर सोयें। लाभ होगा।
- तुलसी और चमेली के पत्ते चबाने से छाले ठीक हो जाते हैं।
- जिन्हें बार-बार छाले होते रहते हैं उसे टमाटर अधिक खाना चाहिए। छालों के लिए टमाटर औषिधि का काम करता है।
- जीभ पर छाले होने पर एक केला गाय के दही के साथ प्रातःकाल सेवन करें।
- मुंह में छाले हो जाने पर फिटकारी और महेन्दी बराबर की मात्रा में पीस कर छालों पर लगाने से आराम मिलता है।

- **दाद दूर करने के लिए खस-खस और नौसादर बराबर मात्रा में मिलाकर पीस लें। इस पाऊडर को दही में मिलाकर दाद पर नियमित लगाए, नियमित प्रयोग से आशाजनक परिणाम सामने होंगे।**

- १५ ग्राम सौंठ, १५ ग्राम अजवाइन, २० ग्राम काला व सफेद नमक, १० ग्राम चीनी, १० ग्राम काली मिर्च, १० ग्राम सूखा पोदीना, २० ग्राम हरड़-बहेड़ा, ५ ग्राम जीरा लेकर बारीक पीस लें। खाना खाने के बाद पानी से आधी छोटी चम्मच लें। पेट के हर प्रकार के रोगों से आपको छुटकारा मिल जायेगा।
- यदि पैर में मोच आ जाये, तो शुद्ध घी में थोड़ा सा नमक मिलाकर मालिश करें। मोच तीन-चार बार की मालिश से ठीक हो जायेगी।
- १५ ग्राम बादाम गिरी, १५ ग्राम मुलहठी, १५ ग्राम मुनक्का, २० ग्राम काली मिर्च सभी चीजों को एक जगह बारीक पीसकर मटर के दाने जैसी बारावर की गोलियां बना लें। दिन में चार बार प्रतिदिन २-२ गोलियां चूसें। सूखी खांसी कुछ ही दिनों में गायब हो जायेगी।
- कपूर और पोदीने का अर्क मिलाकर उसकी ३-४ बूंदें पानी के साथ लेने से कै आना बन्द हो जाती है, जी मिचलना और पेट के दर्द में भी लाभकारी है।
- पीपल के पेड़ की ३-४ कोमल पत्तियाँ चबाकर खाने और इसकी छाल का काढ़ा (२ कप पानी का आधा कप शेष बचे) बनाकर कुछ दिन सेवन करने से दाद, खाज, एकमोजा आदि चर्म रोग नष्ट हो जाते हैं। सूजाक रोग, पेशाब की जलन और शोथ में आराम होता है। इसके काढ़े से मसूड़ों की सूजन व सड़न ठीक होती है।
- नीम के बीज की गिरी या पत्तें तथा तिल दोनों दस-दस ग्राम पीसकर शरीर पर मालिश करें। हर प्रकार-के चर्म रोग ठीक हो जाते हैं।

- ५ ग्राम सौंठ, १० ग्राम गुड़, १८ कप पानी, सौंठ को पीसकर गुड़ पानी में डालकर पकायें। आधा रह जाने पर ठण्डा कर पियें। रुका हुआ मासिक धर्म चालू हो जायेगा।
- अनार के छिलकों और मुलहटी को बराबर मात्रा में मिलाकर बारीक पीस लें। दिन में दो बार चाय की आधी छोटी चम्मच भरकर गरम पानी के साथ सेवन करें। इससे बलगम साफ हो जाता है।
- नीम की छाल, त्रिफला, अमलतास का गूदा, पटेल-पत्र, मुनक्का इत्र वाला १-१ तोला, ६ माशा मिश्री सबका स्वाद कर तीन समान भाग कर ६-६ माशा शहद मिलाकर दिन में तीन बार पीने से मलेरिया, पित्त, ज्वर दूर होकर मलावरोध दूर होता है और भूख लगती है।
- काली तुलसी के पत्तों का रस, तुलसी के पत्तों का रस तथा पोदीना के पत्तों का रस समान भाग मिलाकर ६ या ७ दिन तक सेवन करने से मन्द ज्वर ठीक हो जाता है।
- यदि किसी व्यक्ति को भूख न लगती हो तो पीपल और सौंठ दोनों को बराबर मात्रा में लेकर इन्हें गुड़ में मिलाकर खाने से अजीर्ण रोग दूर हो जायेगा।
- यदि आप सूखी खांसी से पीड़ित हैं तो एक तोला गुड़ को तीन तोले गाय के मूत्र में मिलाकर दिन में ४-५ बार चाटें।
- शरीफे के बीज का तेल सिर पर लगाने से जुएं मर जाती है।
- यदि किसी को पुरानी बवासीर हो तो नीम की पकी हुई निबोलियों को पुराने गुड़ में मिलाकर खाने से बवासीर अच्छी हो जाती है।
- खुरदरे हाथों में सरसों का तेल मथकर गर्म पानी से धायें, हाथ एकदम मुलायम हो जायेगें।
- नींबू के रस को गुलाब जल में मिलाकर लगाने से फोड़े-फुन्सी दूर हो जाते हैं।
- यदि सर्दी में किसी को सिर-दर्द हो जाये तो चन्दन की लकड़ी को घिसकर उसका लेप सिर पर करें तो सर्दी का सिर-दर्द ठीक हो जायेगा।
- खाना खाने के पश्चात् कच्ची व आधी भुनी हुई सौंफ लगभग एक तोला खाने से पेट ठीक रहता है। पेशाब खुलकर आता है व पुरानी पेचिश में लाभ होता है।
- यदा-कदा एक तोला मेथी के बीज कच्चे निगल कर ऊपर से दूध पीने से पेट की चिकनाई साफ होगी व वायु का प्रकोप कम होगा।
- खाने के समय ताजा दही को खूब मथकर उसमें काला नमक, जीरा, सोंठ व हल्की सी हींग (आप पसन्द करें तो) डालकर खाने से पाचन-क्रिया चुस्त रहती है।

हमारे नये संरक्षक

❀ श्री सौधर्म बृहत्तपोगच्छ जैन संघ-वासणा (गुजरात), ❀ श्री महाविदेहतीर्थधाम-नवागाम सुरत (गुजरात), ❀ आहोर निवासी संघवी जुगराज, कान्तिलाल, महेन्द्र, सुरेन्द्र, दिलिप, धीरज, संदीप बेटा-पोता कुन्दनमलजी भुताजी श्रीश्रीमाल वर्धमान गोत्रीय परिवार थाने (महाराष्ट्र)

समाचार दर्शन

परम श्रद्धेय आचार्यश्री के दक्षिण की ओर बढ़ते कदम

परम श्रद्धेय आचार्य श्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी अपने मुनिमंडलसह बम्बई के उपनगरों में विविध शासन प्रभावना कर थाने, भिवंडी, कल्याण, अम्बरनाथ, मोहना, बदलापुर, कर्जत, खोपोली होते हुए लोणावला पधारे। यहाँ भव्य सोमैय्ये के पश्चात् व्याख्यान व अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद शाखा लोनावला द्वारा श्री संघ का स्वामीवात्सल्य रखा गया था। चैत्र सुदि १ को स्व. केसरीमलजी भुताजी की स्मृति में आहोर निवासी मुथा पारसमलजी वालचंदजी द्वारा निर्मित श्री राजेन्द्र जयन्तसेन जैन ज्ञान मंदिर का उद्घाटन समारोह एवं गुरूदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरिजी के फोटो की स्थापना सम्पन्न हुयी। कोरटाजी निवासी श्री चुन्नीलालजी धुलाजी फूलफगर की ओर से गुरूदेव की अष्टप्रकारी पूजा पढायी गयी। शाम को विहार कर पूज्यश्री मुनिमंडलसह धानेरावाले दिनेशभाई सवाणी के बंगले पर ठहरे।

पुणे में राजेन्द्रसूरि जैन ज्ञान मंदिर

पूज्य आचार्य श्री कामशेत, टाकवा बुद्रुक, वडगाम, चिंचवड होते हुए २७ मार्च को भव्य सोमैय्या पूर्वक पुणे पधारे। कांबळी एवं गुरूदेव की आरती की रिकॉर्ड बोलीयाँ हुयी। जिसका लाभ क्रमशः सोलंकी मिश्रीमलजी भोपाजी - सियाणा (जंबू ज्वेलर्स) व सोनराजजी ताराचंदजी धाणसा वालों ने लिया। श्री राज-राजेन्द्रसूरि ज्ञान मंदिर हेतु खिमेल निवासी - श्री घेवरचंदजी ढालावत ने १००० वर्ग फीट का फ्लेट भेंट देने की घोषणा की। दि. ३० मार्च को वहाँ गुरू मंदिर के उद्घाटन के दिन सुबह नाश्ता का लाभ श्री घेवरचंदजी ढालावत ने लिया। शाम को कराड की ओर विहार हुआ।

कराड़ में पदार्पण

पूज्य आचार्य श्री का मुनिमंडलसह चैत्र सुदि १४ को कराड में भव्य प्रवेश हुआ। त्रिदिवसीय महोत्सव के अंतर्गत सुदि १५ को सिद्धचक्र पूजन पढाया गया। इचलकरंजी, बीजापुर आदि आसपास के नगरों से गुरूभक्तों का आगमन हुआ। चैत्री ओली व पारणे कराने का लाभ शा. घेवरचंदजी ताराचंदजी एन्ड कं. ने लिया। महावीर सेवा मंडल के तत्वावधान में सारा आयोजन सफल रहा।

पूज्य श्री यहाँ से विहार कर १३ एप्रिल को बीजापुर पधारने के समाचार मिले हैं। मुद्देविहाल, अदोनी होकर उग्रविहार करते हुए पूज्यश्री नैलोर पधारेंगे। जहाँ रामाणी परिवार द्वारा निर्मित श्री राजेन्द्रसूरि किर्ती मंदिर की प्रतिष्ठा अंजनशलाका जेठ सुदि ११ को सम्पन्न होगी।

श्री अरिहंत जैन प्राणी कल्याण संस्था द्वारा अहिंसा प्रेमियों से अपील

बैंगलोर - कर्नाटक सरकार द्वारा हाल ही में दूध की थैली के साथ मांस के बंद पैकेटों की विक्री योजना बनायी गयी है, जिसका आचार्य श्री स्थूलिभद्रसूरिजी की निश्रा में सम्पन्न जैन नव युवा सम्मेलन में घोर विरोध किया गया। भारत सरकार द्वारा हिंसा को बढावा देनेवाली नितियों की आलोचना की गयी। आज सम्पूर्ण भारत में राजनैतिक अस्थिरता जिस रफ्तार से बढ़ रही है, वह इसी हिंसा का परिणाम है। सभी ने एक आवाज से इस घृणित योजना को निरस्त करने की मांग की एवं अहिंसा प्रेमी बंधुओं व संस्थाओं को इस योजना का कड़ा विरोध करने की अपील की।

एक अपील

अखिल भारत कृषि गो सेवा संघ - बम्बई शाखा के मंत्री - श्री अरविन्द भाई पारिख ने लिखित जानकारी दी है कि संस्था द्वारा कानून की मदद से जानवरों को बचाने या कत्लखानों को रोकने में मिली सफलता को लेकर कुछ संस्थाओं या व्यक्तियों द्वारा कानूनी कार्यवाही के लिये चंदा इकट्ठा करने की बात हमारे ध्यान में आयी है अतः सभी से निवेदन है कि हमें जब भी आवश्यकता होती है तब वर्धमान संस्कृति धाम, जीवन जागृति ट्रस्ट या हमारी शाखा मालेगाम की संस्थायें हमें पूर्ण सहयोग देती है अतः हमने इस हेतु किसी को निमंत्रण नहीं दिया है। इस विषय को लेकर धन इकट्ठा करने अथवा अन्य प्रयासों की ओर ध्यान न देने का हमारा अनुरोध है।

परिषद शाखा इंदौर द्वारा प्रशिक्षण शिविर

अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद शाखा इंदौर द्वारा मालव अंचल की समस्त शाखाओं का एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर ११-४-९३ रविवार को आयोजित किया गया।

श्रीमद् यतीन्द्र जयन्त ज्ञानपीठ द्वारा धार्मिक परिक्षायें

अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद द्वारा राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी की सत्प्रेरणा से स्थापित 'श्रीमद् यतीन्द्र जयन्त ज्ञानपीठ' द्वारा धार्मिक परिक्षाओं का आयोजन किया जा रहा है। विशेष जानकारी हेतु श्री सुरेन्द्र लोढ़ा, धानमण्डी, मन्दसौर - ४५८ ००२ के पते पर सम्पर्क करें।

ज्ञानकसौटी २२ के उत्तर

५२६) वैशाली नगरी ५२७) ३० वर्ष ५२८) १२ वर्ष ६ माह ५ दिन ५२९) दो पाट तक ५३०) सुधर्मा स्वामीजी ५३१) ऋजुवालिका नदी के तट पर ५३२) वैशाख सुद ११ ५३३) १४ हजार ५३४) ३६ हजार ५३५) १ लाख ५९ हजार ५३६) ३ लाख १८ हजार ५३७) राजगृही ५३८) कटपूतना देवी ५३९) पेढाल ग्राम में २० उपसर्ग ५४०) कंचन वर्ण सिंह लंछन ५४१) ९८० वर्ष बाद ५४२) २७ भव ५४३) नर सार के भव से ५४४) श्री गौतमस्वामीजी ५४५) ४२ ५४६) श्रीनन्दीवर्धन ५४७) श्रावस्ती में गौशालक द्वारा ५४८) ३०० ५४९) चंदनबाला ५५०) पावापुरी

भिवंडी में शा झूमरमलजी देवीचंदजी रिखबाजी वेदमुथा परिवार द्वारा सौ. जडावीबेन झुमरमलजी के विशस्थानक तप निमित्त गुरुणीजी श्री हेतश्रीजी, हंसश्रीजी, प्रेमलताश्रीजी, पूर्णकिरणाश्रीजी की प्रेरणा से राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. की शुभ निश्रा में २१ छोड के उद्यापनसह अष्टान्हिका महोत्सव १० मार्च से १७ मार्च तक मनाया गया। १८ मार्च को इनकी तरफ से भिंवडी से कल्याण चैत्यपरिपाटी आयोजित की गयी। रास्ते में कोण में कल्याण संघ द्वारा नाश्ता रखा गया। कल्याण में स्वामीवात्सल्य वेदमुथा परिवार द्वारा आयोजित किया जाकर नगर में आधा-आधा किलो बूंदी वितरीत की गयी। प्रतिदिन संघपूजन, पूजन, रात्रीभावना व अंगी होती थी।

समाचार – सार

विशाखापटनम - आचार्य श्री वारिषेणसूरिजी आदि ठाणा की निश्रा में श्रीं संभवनाथ आदि जिन बिम्बों की प्रतिष्ठा २८ एप्रिल को सम्पन्न होगी।

श्री अंतरिक्ष तीर्थ - आचार्य श्री कलापूर्णसूरीश्वरजी आदि ठाणा की निश्रा में चैत्र मास की शाश्वती ओली की आराधना सम्पन्न हुयी।

कर्जत - भगवान महावीर के जन्म कल्याणक प्रसंग पर नवयुवकों द्वारा असहायों को लड्डू व चद्दरें वितरीत की गयी। शोभायात्रा, पूजा व स्वामीवात्सल्य, रात्रिभावना व आंगी का कार्यक्रम हुआ।

मदुराई - श्री आदिनाथ जैन धार्मिक पाठशाला समिति के तत्वावधान में महावीर जन्मोत्सव निमित्त भक्ति गीत संगीत व भाषण प्रतियोगिता एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम व वंकचूल नाटक प्रदर्शित किया गया।

बेलगाम - राजस्थान जैन चेरिटेबल ट्रस्ट के तत्वावधान में 'बेलगाम गौशाला' शहर से आठ किलो मीटर की दूरी पर ढलगा ग्राम के समीप तीन एकड़ जमीन पंर बनायी गयी है। ट्रस्ट द्वारा पिछले चार वर्षों से महावीर ब्लड बैंक' कार्यरत है। प्रमुख बस स्थानक पर ट्रस्ट द्वारा शीतल जल की व्यवस्था जल्दी ही की जायेगी।

लुणावा - जैनाचार्य श्री गुणरत्नसूरिजी ने लुणावा में भगवान महावीर जन्मोत्सव निमित्त शोभायात्रा के समापन पर शासन स्थापना दिवस मनाने पर बल दिया। आचार्य श्री की निश्रा में खिवान्दी में प्रतिष्ठा २८ अप्रेल को एवं सानवाडा में ध्वजदंड प्रतिष्ठा १२ मई को सम्पन्न होगी।

हैदराबाद - सर्वोदय सेवा संघ द्वारा प्राणीमात्र के कल्याण हेतु कबूतरों को दाना, गायों को घास, अर्थपीड़ित लोगों को दवाई या अन्य सहयोग, अनाथाश्रम में चॉवल आदि जरूरी चीजें पहुंचाना, फल वितरण आदि कार्य हो रहे है।

शोक श्रद्धांजली

❖ **सुरत** - थराद निवासी गुरू भक्त, धर्म प्रेमी सुश्रावक चंदुभाई मफतलाल दोशी का दुःखद अवसान हृदयाघात से १५ फरवरी १९९३ को प्रातः ११ बजकर १५ मिनट पर हुआ। सद्‌गत गुरुमंदिर में उपर दर्शन कर पेढी में आये ही थे कि यह घटना हुई। आप सुरत में एकाउंट का काम करते थे। आपकी दो पुत्रियों ने दीक्षा अंगीकार की है, वे दर्शितकलाश्रीजी एवं दर्शनकाश्रीजी के नाम से संयम जीवन में विचरण कर रही है। आप अपने पिछे पुत्र विपुल मिनेष एवं पुत्रियां निपुणा, नितीना, सेजल आदि भरा-पूरा परिवार छोड़ गये हैं।

❖ **पारा** - पारा निवासी सुश्रावक श्री कस्तुरचंदजी घासीलालजी सियाल का आकस्मिक स्वर्गवास दि. ८-४-९३ को रात्री १० बजे हो गया। आपश्री नवदीक्षित साध्वीजी श्री चिन्तनकलाश्रीजी के सांसारिक पिता थे। आप अपने पिछे भरा पूरा परिवार छोड़ गये हैं।

साहित्य स्वीकार

❋ **आशा औरन की क्या कीजे** : लेखक - मुनिश्री अभयशेखरविजयजी एवं मुनि श्री अजितशेखरविजयजी म. सा., प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थान - जैन संघ राजाजी स्ट्रीट काकीनाड़ा - ५३३ ००१, मूल्य - पन्द्रह रूपये।

मूल गुजराती में लिखित अविक्खा अणाणंदे' का हिन्दी अनुवाद साध्वीजी श्री संस्कारनिधिश्रीजी ने किया है। अपेक्षा ही दुःख का कारण है, इस बात को विभिन्न उदाहरणों एवं घटनाओं द्वारा बताने का सुंदर प्रयास किया गया है। पुस्तक पठनीय है।

❋ A Spiritual Gems Rosary : श्री हेमचंद जैन 'हेम', प्रकाशक एवं प्राप्ति-स्थान - श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन मंदिर ट्रस्ट, १६१ - भुलेश्वर, बम्बई - ४०० ००२ (महाराष्ट्र), मूल्य - दस रूपये।

राजर्षि अमोघवर्षा द्वारा रचित "प्रश्नोत्तर रत्न मालिका" का यह अंग्रेजी अनुवाद और संपादन श्री हेमचंद जैन ने किया है। मूल श्लोक देकर उसमें निहित प्रश्न और उत्तर का अंग्रेजी अनुवाद बहुत सुन्दर ढंग से विवेचित किया गया है। अंग्रेजी जाननेवाले पाठकों के लिए पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है।

❋ **शाकाहार मानव सभ्यता की सुबह** : लेखक - डॉ. नेमीचन्द जैन, प्रकाशक - पी. एस. जैन फाउण्डेशन, ७ ए, राजपुर रोड दिल्ली - ११० ०५४, मूल्य - सदुपयोग।

शाकाहार मात्र आहार नहीं अर्पितु सम्पूर्ण जीवन शैली है। सम्पूर्ण विषय को विविध आयामों द्वारा तर्कसंगत तरीके से पेश किया गया है। पुस्तक बहुत उपयोगी है। हर घर में ऐसे प्रकाशन का संग्रह आवश्यक है। छपाई एवं चार रंगी आवरण मुद्रण अति सुंदर है।

❋ **मांसाहार शंभर तथ्ये (मराठी)** : संपादक - डॉ नेमीचंद जैन, प्रकाशक - अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद शाखा, मानपाडा, थाने (महाराष्ट्र), प्राप्ति-स्थान - जे. के. संघवी (सम्पादक) शाश्वत धर्म कार्यालय, थाने (महाराष्ट्र), मूल्य - दो रूपये।

डॉ. नेमीचंदजी जैन द्वारा लिखित हिन्दी में 'मांसाहार सौ तथ्य' का मराठी अनुवाद किया गया है।

❀ **षड़ द्रव्य विचार (हिन्दी)** : सम्पादन - आचार्य श्री जयंतसेनसूरिजी म. सा. प्रकाशक - श्री राज राजेन्द्र प्रकाशन ट्रस्ट - अहमदाबाद, प्राप्ति-स्थान - जे. के. संघवी (सम्पादक) शाश्वत धर्म कार्यालय, जामली नाका, थाने - ४०० ६०१ (महाराष्ट्र), पृष्ठ १२८, मूल्य - बीस रूपये।

जैन चिन्तकों नें छह मूल द्रव्य माने हैं। गुरूदेव ने विक्रम संवत १९२७ में कुक्षी में षड़ द्रव्य विचार नामक ग्रन्थ लिखा, जिसमें छः द्रव्यों का सांगोपांग सूक्ष्म विवेचन किया गया है। मूल लेखन के साथ आचार्य श्री द्वारा विस्तृत व्याख्या दी गयी है।

❀ **सदभावना (हिन्दी)** : प्रवक्ता - आचार्य प्रवर श्री पद्मसागरसूरिजी, सम्पादक - मुनि श्री विमलसागरजी म.सा. प्रकाशक एवं प्राप्ति-स्थान-श्री जीवन निर्माण केन्द्र, उसमान पुरा उद्यान के पास, अहमदाबाद - ३८००१३ (गुजरात) मूल्य-तीन रूपये।

विश्व सद्भावना दिवस के उपलक्ष में सद्विचार परिवार द्वारा अहमदाबाद में आयोजित पूज्य श्री के प्रवचन के अंशों को प्रकाशित किया गया है।

❀ **मैं भी एक कैदी हूँ** : प्रवक्ता, सम्पादक, प्रकाशक, प्राप्ति-स्थान, एवं मूल्य उपरोक्तानुसार

रक्षाबंधन के दिन साबरमती के सेन्ट्रल जेल में सहविचार परिवार द्वारा आयोजित प्रवचन के अंशों को प्रकाशित किया गया है।

❀ **मानसिक क्रान्ति (गुजराती)** : प्रवक्ता, सम्पादक, प्रकाशक, प्राप्ति-स्थान उपरोक्तानुसार, मूल्य - पांच रूपये।

पर्युषण, तप की महत्ता एवं कल्पसूत्र विषय पर तीन लेखों का समावेश इस पुस्तक में किया गया है।

❀ **नया संदेश** : सम्पादक - मुनिराज श्री देवेन्द्रसागरजी म.; प्रकाशक - अष्ट मंगल फाऊण्डेशन; प्राप्ति-स्थान - सुरेश शाह, एन - ५, मेघालय कॉलनी, नारायणपुरा, अहमदाबाद - १४, मूल्य - दो सौ रूपये।

हिंसाचार की ओर प्रवृत्त मानव को अहिंसा शाकाहार की ओर प्रवृत्त करने के लिये मांसाहार के अनिष्टों को बतलाते हुए विविध लेखकों के लेखों को प्रकाशित किया गया है। गुजराती, हिन्दी व अंग्रेजी तीन विभागों में ग्रंथ को बांटकर बीच-बीच में रेखाचित्र व आगम मूल सूक्तियाँ अर्थ के साथ दी गयी है।

❀ **ध्यान : प्रयोग और परिणाम** : सम्पादक - महोपाध्याय चन्द्रप्रभसागरजी, प्रकाशक एवं प्राप्ति-स्थान - श्री जितयशाश्री फाउंडेशन, ९ सी, एस्प्लानेड रो ईस्ट, कलकत्ता - ७०० ०६९, मूल्य - दस रूपये।

प्रस्तुत कृति ध्यान के स्वरूप और प्रयोग के आधार पर प्रकाशित है। शांति और सत्य को मध्य बिन्दु रखकर ध्यान को विविधता से समझाया गया है।

थाने के मानपाड़ा में शानदार प्रतिष्ठोत्सव

(विहंगावलोकन)

महाराष्ट्र राज्य के कोंकण प्रदेश में स्थित थाने तीर्थ की प्राचीनता इतिहास प्रसिद्ध है। प्रतिवर्ष शाश्वती ओली (चैत्र व असोज मास) में श्रीपाल रास पठन के समय इसकी गौरवगाथा गायी जाती है। इसी थाने तीर्थ से चार किलोमीटर थाने रेलवे स्टेशन से पांच किलोमीटर एवं बोरीवली से थाने मार्ग घोड़बंदर रोड़ पर थाने के परिसर में चित्तलसर मानपाड़ा स्थित है। यहाँ जैनों के बीस घर हैं।

मंदिर-उपाश्रय निर्माण का निर्णय - मानपाड़ा में जिन दर्शन, पूजन व आराधना हेतु मन्दिर व उपाश्रय की आवश्यकता महसूस की जा रही थी। स्थानीय श्रावकों द्वारा पिछले २-३ वर्षों से इस हेतु प्रयत्न जारी था। एक बार सभी आकर संघवी परिवार से मार्गदर्शन हेतु मिले। पूज्य मातुश्री मोवनबाई की भावनानुसार मंदिर व उपाश्रय बनाने की स्वीकृति हुयी। जल्दी ही नगरजनों ने सर्वसम्मति से नगर के मध्य एक जगह पसंद की।

मंदिर-उपाश्रय का खात मुहूर्त - संवत २०४८ माघ सुदि रविवार दि. १६/२/९२ को शुभमुहूर्त में निर्माणाधीन जिन मंदिर व उपाश्रय का खात मुहूर्त आहोर निवासी संघवी कुन्दनमलजी भुताजी परिवार द्वारा सम्पन्न हुआ। साध्वीजी दिव्यकिरणाश्रीजी की निश्रा में आयोजित कार्यक्रम में संघवी परिवार द्वारा सभी से आत्मीय सहयोग की अपील करते हुए यह कार्य जल्दी पूर्ण होकर मंगलप्रतिष्ठा सम्पन्न होने हेतु शासनदेव से प्रार्थना की गयी। संघवी परिवार एवं नगर के कई भाई-बहनों ने प्रतिष्ठा जल्दी हो, इसलिए कई प्रकार के अभिग्रह लिये।

श्री सीतारामजी (श्री राम कन्स्ट्रक्शन) एवं सोमपुरा पुखराजजी की देख-रेख में निर्माण कार्य प्रारंभ हुआ।

जिन-बिम्बों एवं गुरु-प्रतिमाओं का मंगल नगर प्रवेश - गच्छाधिपति राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी 'मधुकर' के शुभाशिर्वाद एवं प्रदत्त मुहूर्तानुसार मंदिर में विराजित होनेवाले भगवान श्री शान्तिनाथजी, श्री सुमतिनाथजी, श्री पार्श्वनाथजी जिन-बिम्बों एवं गणधर - श्री गौतमस्वामीजी, गुरूदेव श्री राजेन्द्रसूरिजी की प्रतिमाओं का मंगल प्रवेश वैशाख सुदि ५ गुरुवार दि. ६/५/९२ को सानंद सम्पन्न हुआ। ग्रीनवुड कॉम्प्लेक्स से चांदी के रथ में भगवान को विराजमान कर बैण्डबाजों की

सुरीली धुन में चल समारोह द्वारा मानपाड़ा नगर में भ्रमण कर विजयमुहूर्त में चल प्रतिष्ठा की गयी। इस प्रसंग पर स्वामीवात्सल्य आयोजित किया गया।

प्रतिष्ठा हेतु आचार्य भगवंत को निवेदन – निर्माण कार्य अबाध गति से चल रहा था। परम उपकारी आचार्य भगवंत श्रीमद् विजयजयन्तसेनसूरीश्वरजी अपने मुनिमंडल के साथ सूरत में चातुर्मासार्थ विराजमान थे। संघवी परिवार अपने स्नेहीजन एवं मानपाड़ा श्री संघ के साथ २१ सितम्बर को पूज्य श्री के पास प्रतिष्ठा का मुहूर्त एवं निश्रा प्रदान करने की विनंती लेकर पहुंचा। पूज्य श्री ने हम पर कृपा करके निश्रा प्रदान करने की स्वीकृति के साथ माघ सुदि १३ शुक्रवार दि. ५/२/९३ का शुभ मुहूर्त देते ही हर्ष व्याप्त हो गया।

सोने में सुगंध : उद्यापन महोत्सव – प्रतिष्ठा महोत्सव में अष्टान्हिका महोत्सव के साथ इस अवसर पर श्रीमति मोवनबाई कुन्दनमलजी, श्रीमति विमलादेवी जुगराजजी, श्रीमति शांतिदेवी कान्तिलालजी की विविध तपश्चर्याओं के निमित्त ९ छोड का उद्यापन रखा गया।

अष्टान्हिका महोत्सव का मंगल कार्यक्रम – माघ सुदि ७ शनिवार दि. ३०/१/९३ – आज अष्टान्हिका महोत्सव का प्रारंभ दिन था। सूरत से उग्र विहारकर मात्र १० दिन में परम श्रद्धेय आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरिजी आदि मुनिमंडल एवं साध्वीजीश्री भुवनप्रभाश्रीजी, शशीकलाश्रीजी आदि ठाणा का मंगल पदार्पण हुआ। पूज्य श्री का मानपाड़ा प्रवेश प्रसंग पर सामैय्या व गंहुलियों द्वारा भव्य स्वागत किया गया। समारोह नगर भ्रमण करते हुए मेहमान रुप में बिराजित श्री शान्तिनाथ आदि जिन प्रतिमाओं के दर्शन-वंदन कर नवनिर्मित मंदिर पहुंचा। संघ पूजन व श्रीफल की प्रभावना हुयी। प्रातः १० बजे पूज्य श्री सकल संघ के साथ प्रतिष्ठा महोत्सव स्थल श्री गुरूराजेन्द्र नगर ग्रीनवुड कॉम्प्लेक्स में पधारे। भव्य प्रवेश के पश्चात् ग्रीनवुड कॉम्प्लेक्स में मंदिर निर्माणाधीन स्थल होते हुए मधुकर प्रवचन मंडप में पधारे। प्रवचन के बाद श्री जैन युवक संगीत मंडल लोनावला द्वारा श्रीमद् राजेन्द्रसूरि अष्टप्रकारी पूजा पढायी गयी। दीक्षार्थी मंजुलाबहन भीनमाल निवासी का व्याख्यान में प्रतिष्ठा महोत्सव समिति की ओर से बहुमान किया गया। कुंभ, दीप स्थापना व ज्वारारोपण किया गया।

माघ सुदि ८ रविवार दि. ३१/१/९३ को सुबह की नवकारसी भीनमाल निवासी शा. भँवरलालजी, राजमलजी, उगमराजजी, अशोक, संजय, परेश, जीतू, मनीष, कुणाल लुक्कड परिवार (ग्रीनवुड कॉम्प्लेक्स) वालों की ओर से रखी गयी थी। दोपहर में श्री राजस्थान जैन संघ -

थाना के अध्यक्ष, ट्रस्टियों, सदस्यों व मंडलों द्वारा नवकारसी निमित्त लुकड परिवार का स्वागत किया गया। समकित अष्ट प्रकारी पूजा पढायी गयी। थाने जिले के शिवसेना अध्यक्ष धर्मवीर श्री आनंद दिघे आदि कई विशेष अतिथि के रूप में पधारे थे।

माघ सुदि ९ सोमवार दि. १/२/९३ – प्रतिदिन की तरह प्रवचन, स्वामीभक्ति, आरती व रात्रिभावना की गयी। श्री नवपदजी की पूजा पढायी गयी। दश दिक्पाल एवं अष्टमंगल की स्थापना की गयी। सात रूपये संघ-पूजन हुआ।

माघ सुदि १० मंगलवार दि. २/२/९३ : आज व्याख्यान में ३१-३१ रूपये का विविध महानुभावों की ओर से रिकार्ड संघपूजन हुआ। कल होनेवाले अट्ठारह अभिषेक के चढावे बोले गये। जिसमें विविध भावुकों ने लाभ लिया। श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक पूजा पढायी गयी। संघवी परिवार की आग्रह भरी विनंती को मानकर पाटण से उग्र विहारकर साध्वीजी श्री प्रेमलताश्रीजी, पूर्णकिरणाश्रीजी, कल्परेखाश्रीजी आदि ठाणा ३ पधारे।

माघ सुदि ११ बुधवार दि. ३/३/९३ : प्रतिदिन की तरह व्याख्यान आदि के बाद विजयमुहूर्त में अट्ठारह अभिषेक का कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। श्रीफल की प्रभावना हुयी व नवनिर्मित मंदिर मे चैत्याभिषेक किये गये।

माघ सुदि १२ गुरूवार दि. ४/३/९३ : प्रातः ९ बजे गुरु राजेन्द्र नगर ग्रीनवुड कॉम्प्लेक्स से भव्य जलयात्रा का चल समारोह प्रारंभ हुआ। चांदी के रथ में चउमुख भगवान को लेकर बैठने का लाभ शा. छगनराजजी नगराजजी वजावत (आहोर); शा. चंदनमलजी छगनराजजी लुंकड (तीखी); शा. गिरधारीमलजी जुहारमलजी (आहोर); शा. धनाजी पूनमचंदजी (आहोर) वालों ने लिया। रथ के सारथी बनने का लाभ शा. झुमरमलजी रिखबाजी वेदमुथा (आहोर) ने लिया। दो घोड़ों की विक्टोरिया में दादा गुरूदेव राजेन्द्रसूरिजी का फोटो लेकर शा. नारायनदासजी वसाजी छाजेड (केशवणा) परिवार बैठे थे। पांच घोडे आहोर के ढोल व अजंता बेन्ड समारोह की शोभा बढा रहे थे। गजराज पर संघवी परिवार था। चल समारोह में सबसे आगे इंद्रध्वज था। अभिनन्दन बैंड मंडल-थाने अपनी सुरीली धुन बहा रहा था। चल समारोह ने घोडबंदर रोड होते हुए मानपाड़ा नगर में मुख्य मार्गों पर संचलन किया। पूरा नगर तोरणों व बैनरों से सजाया गया था। जैन धर्म की जय-जयकार, गुरू राजेन्द्र की जय-जयकार एवं राष्ट्रसन्त की जय-जयकार से सारा मानपाड़ा नगर गूंज उठा। भावुकगण भक्ति विभोर होकर नृत्य कर रहे थे। बहने मंगल गीत गाती हुयी चल रही

थी। पुनः राजेन्द्रनगर आकर वरघोडे का समापन हुआ। शाम ५ बजे ठाणे शहर जिला कॉंग्रेस अध्यक्ष - श्री सुभाष कानडे आचार्य श्री के दर्शनार्थ पधारे। शाम ६-१५ बजे जाजम बिछाने का मुहूर्त किया गया एवं रात्रि भावना में प्रतिष्ठोत्सव सम्बन्धी चढावे बोले गये।

प्रभुजी बिराजे मंदिर में (प्रतिष्ठोत्सव दिन) - माघ सुदि १३ शुक्रवार दि. ५/२/९३ : प्रतिष्ठा का मंगलमय चिर प्रतिक्षित दिन आ गया। प्रातःकाल से चारों ओर वातावरण में हर्ष नजर आ रहा था। पूज्य आचार्य भगवंत की निश्रा में प्रतिष्ठोत्सव गुरु राजेन्द्रनगर से जिनबिम्बों गुरुप्रतिमाओं के साथ प्रातः ९ बजे सभी नवनिर्मित शांतिनाथ जिनालय, मानपाड़ा की ओर प्रस्थित हुए। मंगल बेला में विधि विधान के साथ भगवान को वांदकर व पोंखकर जिनालय में प्रवेश कराया। प्रतिष्ठोत्सव सम्बन्धी विविध लाभ लेने वाले सभी भाग्यशाली अपने-अपने स्थान पर तैयार थे। विधि विधान कराने वाले श्री हेमराजजी यति ने सभी को आवश्यक सूचनायें देकर प्रतिष्ठाविधी शुरू की 'ॐ पुण्याहम्-पुण्याहम्' प्रियन्ताम्-प्रियन्ताम्' के मंगल नादों से सारा वातावरण गगूंजित होने लगा। सभी को नवकार मंत्र गिनने की सूचना दी गयी। शुभ घड़ी में यथा समय थाली का रणकार होते ही घंटानाद के साथ जय-जय शान्तिनाथ की धुन मची। बैण्ड की मधुर ध्वनियाँ गुंजने लगी। मूलनायक शांतिनाथ भगवान, सुमतिनाथ भगवान, पार्श्वनाथ भगवान, गणधर गौतम स्वामीजी, दादा गुरुदेव - राजेन्द्रसूरिजी, अधिष्ठायक - गरुडयक्ष, अधिष्ठायिका - निर्वाणादेवी, प्रासादी देवी की मंगल प्रतिष्ठा की गयी। बाहर पधारे हजारों भावुकों को प्रतिष्ठा कार्यक्रम देखने के लिये क्लोज सर्किट टी.वी की व्यवस्था की गयी थी। गजराज पर तोरण वधाया, माणक स्तंभ की स्थापना की गयी एवं कुमकुम के थापे आलेखित किये गये।

दर्शनार्थियों की भीड लगी थी। शाम ४ से रात्रि ८ बजे तक दर्शनार्थ आनेवाले सभी अजैन भाईयों को प्रसाद रूप में बूंदी के पेकेट्स दिये गये।

ज्ञान मंदिर का उद्घाटन - श्री राजेन्द्रसूरि ज्ञान मंदिर में गुरुदेव राजेन्द्रसूरिजी व वर्तमानाचार्य राष्ट्रसन्त श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी के फोटो की स्थापना की गयी। इसी अवसर पर थाना तीर्थ मूलनायक श्री मुनिसुव्रत स्वामी एवं नाकोडा भैरव के फोटो की स्थापना भी की गयी।

अभिनंदन समारोह एवं पुस्तक विमोचन - दोपहर २ बजे पूज्य राष्ट्रसन्त जैनाचार्य श्रीमद्वियज जयन्तसेनसूरीश्वरजी की ९ वीं आचार्यपदारोहण तिथि निमित्त अभिनंदन का कार्यक्रम रखा गया। पूज्य श्री को कांबली

वोहराने का लाभ शा. नगराजजी तोलाजी मुथा परिवार धाणसा वालों ने लिया। संघवी परिवार द्वारा ग्रीनवुड कॉम्प्लेक्स के मालिक श्री भँवरलालजी, राजमलजी, उगमराजजी, सोहनराजजी लुंकड परिवार भीनमाल वालों का साफा, चुनडी, पूजा के सामान, शाल द्वारा विशेष रूप से स्वागत किया जाकर प्रतिष्ठा महोत्सव स्थल हेतु दिये गये तन-मन-धन से सहयोग की भूरि-भूरि प्रशंसा की। मंदिर के आर्किटेक्ट श्री सीतारामजी, श्री भूरमलजी जैन, श्री व श्रीमति डा. हेमराज पोरवाल, श्री रामनारायण शर्मा, आदि का सन्मान हार, श्रीफल, शॉल व प्रशस्ति-पत्र द्वारा, प्रतिष्ठोत्सव में सहयोग हेतु, सन्मानित किया गया। संघवी परिवार द्वारा अ. भा. सौधर्म वृहत्तपागच्छ के उपाध्यक्ष - श्री चैतन्यजी काश्यप एवं अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के अध्यक्ष - श्री सेवंतीभाई मोरखिया का शॉल-श्रीफल-हार द्वारा स्वागत किया गया। श्री शांतिनाथ जैन मंदिर ट्रस्ट के सहयोग से अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद शाखा मानपाड़ा द्वारा प्रकाशित डा. नेमीचंदजी जैन द्वारा लिखित 'मांसाहार १०० तथ्य' का मराठी अनुवाद श्री चैतन्यजी काश्यप के शुभहस्ते विमोचित किया गया। संघवी परिवार को तिलक करने का लाभ शा. चम्पालालजी हिम्मतमलजी चौपड़ा (आहोर), माला पहिनाने का लाभ शा. छगनराजजी नगराजजी वजावत (आहोर), साफा चुनडी द्वारा स्वागत करने का लाभ शा. नारायणदासजी वसाजी छाजेड़ (केशवणा) एवं श्रीफल द्वारा स्वागत का लाभ शा. गिरधारीमलजी जुहारमलजी परिवार (आहोर) ने लिया। श्री मानपाड़ा जैन संघ, श्री थाने जैन संघ, अ. भा. सौधर्म वृहत्पोगच्छ जैन संघ, अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद, महावीर जैन सेवा मंडल-कराड, अभिनंदन जैन मंडल - थाना आदि संस्थाओं द्वारा अभिनंदन पत्र, शॉल, श्रीफल व माला द्वारा संघवी परिवार का स्वागत किया गया।

द्वारोद्घाटन एवं शांतिस्नात्र - माघ सुदि १५ शनिवार दि. ६/२/९३
प्रातः ६ बजे चतुर्विध श्री संघ के साथ संघवी परिवार गजराज पर आसीन होकर श्री शांतिनाथ जिनालय पहुंचे। द्वार खोलकर सकल श्री संघ को दर्शन कराये व आचार्य भगवंत के साथ सामूहिक चैत्यवंदन किया। दोपहर विजय मुहूर्त में नूतन जिनालय में शान्तिस्नात्र पढायी गयी। श्रीफल की प्रभावना की गयी।

शाम चार बजे पूज्य आचार्य भगवंत ने मुनिमंडल के साथ भाइन्दर की ओर विहार किया।

सम्पूर्ण आयोजन को सफल बनाने में श्री उगमराजजी (ग्रीनवुड काम्प्लेक्स), श्री भूरमलजी जैन, श्री पारसमणि, श्री घेवरचंदजी, डा. हेमराज पोरवाल, श्री रमेशभाई थापर, श्री लक्ष्मीकांत सेठीया, श्री बाबुलालजी बोहरा, श्री कांतिलालजी गेलड़ा, श्री घीसुलालजी जैन, श्री सुरेशजी चौपड़ा श्री रामरतनजी छाजेड, श्री शेषमलजी जैन, श्री जितेन्द्र डूंगरवाल, श्री महेन्द्र छत्तरसिंहजी जैन, श्री नगराजजी मुथा, श्री राजकुमार जैन, श्री अनिल राठौड, श्री अभिनंदन जैन मंडल, श्री महावीर जैन सेवा मंडल (कराड़), श्री मुनिसुव्रत स्वामी महिला मंडल, श्री राजस्थानी पार्श्व महिला मंडल, अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद-शाखा-मानपाड़ा, श्री मानपाड़ा जैन संघ के सभी भाईयों एवं अनेकानेक शुभेच्छकों का प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से सहयोग रहा। इस अवसर पर गुजरात, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, आंध्रप्रदेश, तामिलनाडु, कर्नाटक आदि प्रदेशों से कई भावुकों का आगमन हुआ।

आयोजन का लाभ श्री शान्तिनाथ जैन मंदिर ट्रस्ट के संयोजन में आहोर निवासी संघवी कुन्दनमलजी भुताजी परिवार ने लिया।

सद्गुरू चरण पूजिये अंतर प्रेम जगाय

(प्रतिष्ठा में मंगल पावन निश्रा)

प. पू. राष्ट्रसंत, तीर्थ प्रभावक साहित्य मनीषी आचार्य देव श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी 'मधुकर', मुनिराज श्री नित्यानंदविजयजी, मुनिराज श्री हेमरत्नविजयजी, मुनिराज श्री विश्वरत्नविजयजी, मुनिराज श्री सिद्धरत्नविजयजी, मुनिराज श्री चारित्ररत्नविजयजी म. सा. आदि ठाणा

साध्वी वृंद – पू. साध्वीजी श्री भुवनप्रभाश्रीजी, साध्वीजी श्री प्रेमलताश्रीजी, साध्वीजी श्री पूर्णकिरणाश्रीजी, साध्वीजी श्री चंद्रयशाश्रीजी, साध्वीजी श्री शशीकलाश्रीजी, साध्वीजी श्री दिव्यदृष्टाश्रीजी, साध्वीजी श्री अविचलदृष्टाश्रीजी, साध्वीजी श्री अनुपमदृष्टाश्रीजी, साध्वीजी श्री अमितदृष्टाश्रीजी, साध्वीजी श्री दर्शितकलाश्रीजी, साध्वीजी श्री दर्शनकलाश्रीजी, साध्वीजी श्री जीवनकलाश्रीजी, साध्वीजी श्री कल्परेखाश्रीजी, साध्वीजी श्री भक्तिरसाश्रीजी, साध्वीजी श्री निरूपमकलाश्रीजी, साध्वीजी श्री अपूर्वकलाश्रीजी, साध्वीजी श्री मैत्रीकलाश्रीजी, साध्वीजी श्री निरंजनकलाश्रीजी, साध्वीजी श्री चिंतनकलाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा

प्रतिष्ठोत्सव की झलकियाँ

- भांडवपूर से प्रतिमाजी लाते समय वैशाख की गर्मी में भी अचानक वृष्टि हुयी, जैसे वरुण राजा ने हर्ष व्यक्त किया हो।
- मानपाड़ा में भगवान के प्रवेश दिन वैसाख सुदि ५ गुरूवार दि. ६-५-९२ को महाराष्ट्र में हडताल तय थी लेकिन पत्रिका छपकर आते ही वह एक दिन के लिये आगे टली और भगवान का मंगल प्रवेश धुमधाम पूर्वक हुआ।
- संवत २०४८ माघ सुदि १३ को मंदिर-उपाश्रय का खात मुहूर्त सम्पन्न हुआ एवं ठीक एक वर्ष पश्चात् अर्थात् संवत २०४९ माघ सुदि १३ के दिन प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई।
- 'सारा काम मां १०० विघ्नों' उक्ति के अनुसार समय-सम्य पर विघ्नसंतोषियों द्वारा कई प्रकार की बाधायें डालने का प्रयत्न किया गया किन्तु जिस प्रकार सूर्य को बादल कब तक घेरकर छुपा सकते हैं आखिर बादल बिखर जाते हैं व सूर्य प्रकाशमान हो उठता है।
- प्रतिष्ठा जल्दी होवे, इस शुभ आशय से संघवी परिवार व नगर के कई भाई-बहनों ने कई प्रकार के अभिग्रह लिये थे।
- सूरत में चातुर्मासार्थ विराजमान आचार्यभगवंत से, मुहूर्त लेने व प्रतिष्ठा
में निश्रा प्रदान करने की विनंती करने हेतु संघवी परिवार के स्नेहीजन व मानपाड़ा संघ के ४० भाई-बहन गये थे।
- प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में थाने मंदिरजी के मणिभद्र हॉल में नगर की सभी बहनों को आमंत्रित कर गांव साजी में मंगलगीत गाये गये व श्रीफल की प्रभावना वितरित की गयी।
- सूरत व बम्बई में दंगे फसाद के कारण विषम वातावरण से लोगों में पूज्य श्री के आगमन की आशंका, किन्तु आचार्य श्री का विशाल समुदाय के साथ उग्र विहारकर सकुशल व यथासमय पदार्पण
- गुरुराजेन्द्र नगर (ग्रीनवुड काम्प्लेक्स) इंद्रपुरी की तरह तोरण, पताकाओं व नाना प्रकार के बेनरों व विद्युत रोशनी से सुसज्जित किया गया था।

- जैन मंदिर टेंभीनाका थाने से महोत्सव स्थल तक आने के लिये वाहन सुविधा प्रतिष्ठा महोत्सव समिति द्वारा हर समय उपलब्ध
- ३१ जनवरी को ग्रीनवुड काम्प्लेक्स परिवार द्वारा श्री राजस्थान जैन संघ, थाने की रजा लेकर नवकारसी का आयोजन एवं श्री राजस्थान जैन संघ द्वारा उनका स्वागत
- इन्द्रध्वजा, गजराज, विक्टोरिया, रथ, बैंड, ढोल, घोड़े आदि के साथ मानपाड़ा नगर में ऐतिहासिक विशाल शोभायात्रा (वरघोडा)
- अरिहन्त टेन्ट हाउसवाले श्री राजुभाई नागदा वालों की टेन्ट हाऊस एवं विद्युत रोशनी द्वारा सुन्दर सेवायें
- सेवाभावी डा. हेमराजजी पोरवाल एवं श्रीमति अंजना पोरवाल द्वारा प्रतिदिन दोपहर दो घंटे वैद्यकीय सेवायें
- सुप्रसिद्ध संगीतकार चेतनकुमार गोपाल आर्केस्ट्रा पार्टी द्वारा प्रतिदिन पूजा व रात्रि भावना में भक्ति की रमझट
- चेतन ठक्कर एवं साथियों द्वारा रात्रि भावना में दीपक नृत्य, मयूरनृत्य, भांगडा नृत्य, दांडिया रास, नागिन नृत्य व बहनों द्वारा गरबा रास
- प्रतिदिन प्रातः बहनों द्वारा मंगल प्रभाती गान
- प्रतिदिन प्रातः शहनाई वादन
- विभिन्न मंडलों एवं भक्तिप्रिय भाविकों द्वारा अद्भुत भक्ति से वातावरण गुंजायमान
- आहोर के ढोल व अजंता बेंड द्वारा समय-समय पर सूरीली मधुर धुनें
- प्रतिष्ठोत्सव के दिन दस हजार से ज्यादा भाविकों का पदार्पण
- प्रतिष्ठा महोत्सव के अंतर्गत राष्ट्रसंत जैनाचार्य के दर्शनार्थ कई राजनेताओं, विधायकों, नगरसेवकों एवं विशिष्ट महानुभावों का आगमन
- प्रतिष्ठोत्सव के समाचार कई दैनिक समाचार पत्रों में प्रकाशित
- प्रतिष्ठा महोत्सव के दिन शाकाहार प्रचार के कार्यक्रम के अंतर्गत 'मांसाहार सौ तथ्य' की मराठी आवृत्ति का प्रकाशन

- बाहर से पधारे हुए आदरणीय मेहमानों के रहने हेतु महोत्सव स्थल गुरू राजेन्द्र नगर के प्रांगण में धनचंद्र-भवन भूपेन्द्र-भवन, यतीन्द्र-भवन, विद्याचंद्र-भवन में सर्व सुविधायुक्त अलग-अलग फ्लेट उपलब्ध
- महोत्सव दरम्यान प्रतिदिन विविध पूजाऐं, संघपूजन, आंगी व रात्री प्रभावना
- महाराष्ट्र राज्य में प्रथम बार सौधर्मवृहत्तपागच्छ संघ के साधु-साध्वियों की विशाल संख्या में उपस्थिति
- संघवी परिवार की आग्रह भरी विनंती स्वीकार कर पाटण से ७०० कि.मी. का उग्र विहार कर साध्वीजी श्री प्रेमलताश्रीजी आदि ठाणा ३ का प्रतिष्ठोत्सव पर पदार्पण
- लोगों के द्वारा यह कहते सुना गया कि ऐसे काश्मीर, महाबलेश्वर, माथेरान जैसे नैसर्गिक खुशनुमा वातावरण में प्रतिष्ठा महोत्सव का ऐसा सुंदर आयोजन प्रथम बार देखने को मिला।
- कई आचार्यों, मुनि भगवंतों, साध्वीगणों, एवं शुभचिंतकों द्वारा प्रतिष्ठोत्सव के अवसर पर शुभ संदेश प्राप्त
- आठों दिन दोनों समय स्वामीभक्ति
- प्रतिदिन प्रातः नित नये व्यंजनों के साथ ताजा नाश्ता
- सुबह से शाम तक चाय कॉफी की अविरत व्यवस्था
- जगह-जगह पर जलपान की व्यवस्था
- छोटे बच्चों को खेलने के लिये झुलों व पार्क की व्यवस्था
- पुछताछ कार्यालय में ध्वनिवर्धक यंत्र (माईक) से के. के. संघवी द्वारा लगातार पधारनें वालो का स्वागत एवं अन्य जानकारियों का अविरत प्रसारण
- पुछताछ कार्यालय में टेलिफोन की व्यवस्था
- पुछताछ कार्यालय के कार्यकर्ताओं द्वारा हर समय सेवायें उपलब्ध
- धार्मिक पुस्तक विक्री केन्द्र व शाश्वत धर्म मासिक प्रचार/प्रसार स्टॉल

- प्रतिष्ठा के पूर्व सारे मानपाड़ा में सडकों का नविनीकरण हुआ
- प्रतिष्ठोत्सव के समय बम्बई आदि आसपास के क्षेत्रों में अशांति के वातावरण के बावजूद थाने में सम्पूर्ण शांति
- ६ दिसम्बर की घटनाओं के बाद सारे देश में अनिश्चितता का वातावरण किन्तु महोत्सव पूर्णाहुति दिन ६ फरवरी तक थाने में किसी भी प्रकार की अशान्ति नहीं रही
- प्रतिष्ठा के समय भावुकों की सुविधा के लिये क्लॉज सर्किट टी. वी. की व्यवस्था
- राष्ट्रसंत जैनाचार्य द्वारा अब तक १२५ से अधिक प्रतिष्ठायें विभिन्न राज्यों में हो चुकी है, लेकिन महाराष्ट्र राज्य में उनकी निश्रा में यह प्रथम प्रतिष्ठा हुयी
- प्रतिष्ठा के दिन शाम ४ से ८ दर्शनार्थ आनेवाले जैन-अजैन भाविकों को प्रसाद के रूप में बूंदी के ५००० पेकेट्स वितरित किये गये।
- प्रतिष्ठा महोत्सव में महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान, आंध्रप्रदेश, तामीलनाडु, कर्नाटक, मध्यप्रदेश से श्रद्धालुजन पधारे थे।
- गुरूदेव राजेन्द्रसूरिजी की प्रतिमा विराजमान करने का रिकार्ड चढावा रहा, जिसका लाभ मानपाड़ा निवासी परमार परिवार ने लिया।
- अ. भा. सौधर्मवृहत्तपागच्छ संघ के उपाध्यक्ष एवं अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के अध्यक्ष का इस अवसर पर आगमन
- प्रतिष्ठा महोत्सव स्थल पर ४० गोरखों-चौकीदारों का स्टॉफ दिन-रात कार्यरत था
- प्रतिष्ठा महोत्सव दरम्यान पधारे हुए मेहमानों के किसी भी चीज के गुम होने या शारीरिक तकलीफ की कोई घटना नहीं हुई
- ग्रीनवुड काम्प्लेक्स परिवार का तन-मन-धन से अभूतपूर्व सराहनीय सहयोग
- प्रतिदिन सुबह शाम भगवान की आरती मंगलदीवा व गुरूदेव की आरती होती थी।

प्रतिष्ठोत्सव निमित्त विविध लाभ लेने वालों की शुभ नामावली

- भगवान के मुनिम बनना
  शा. ताराचंदजी भानाजी वेदमुथा – आहोर
- चढावा लेने वालों का तिलक से बहुमान एवं संघवी परिवार का श्रीफल व रूपानाणा से स्वागत करना
  शा. शेषमलजी गिरधारीमलजी – आहोर
- चढावा लेने वालों का माला पहिनाकर बहुमान करना
  शा. घेवरचंदजी छगनराजजी तलावत – अहमदाबाद
- मूलनायक श्री शान्तिनाथजी भगवान को विराजमान, दण्ड ध्वजारोहण व कलश स्थापना, श्री राजेन्द्रसूरि ज्ञान मंदिर में राष्ट्रसंत आचार्य श्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी के फोटो पर नामकरण, मंदिर द्वारोद्घाटन करना
  संघवी कुंदनमलजी भुताजी श्री श्रीमाल वर्धमान गौत्र परिवार – आहोर
- श्री सुमतिनाथ प्रभु को विराजमान, संघवी परिवार का तिलक द्वारा स्वागत, गुरू महाराज के पाट पर नामकरण
  शा. चम्पालालजी हिम्मतमलजी चौपडा – आहोर
- श्री पार्श्वनाथ प्रभु को विराजमान, श्री मुनिसुव्रतस्वामी के फोटो पर नामकरण, श्री राजेन्द्रसूरि ज्ञान मंदिर में गुरूदेव श्री राजेन्द्रसूरिजी के फोटो पर नामकरण
  शा. छगनराजजी भुताजी श्रीश्रीमाल वर्धमान गौत्र परिवार – आहोर
- गणधर श्री गौतमस्वामीजी को विराजमान, श्री सुमतिनाथ प्रभु के शिखर पर कलश की स्थापना, मंदिर में प्रवेश के समय भगवान को वधाना
  शा. वीरचंदजी धनाजी जीवावत परिवार – आहोर
- दादा गुरुदेव श्री राजेन्द्रसूरिजी की प्रतिमा विराजमान करना
  शा. मीठालालजी जुहारमलजी परमार परिवार – मानपाड़ा (गेनडी)
- पंचतीर्थ की स्थापना करना
  वोरा नानालाल वीरचंदभाई – थराद
- अधिष्ठायक गरूडदेव की स्थापना, गुरु महाराज की छत्री पर कलश की स्थापना, प्रतिष्ठा के समय घंटानाद, परम श्रद्धेय आचार्य श्री को कांबली वोहराना
  शा. नगराजजी तोलाजी मुथा – धाणसा
- अधिष्ठायिका निर्वाणी देवी की स्थापना, भगवान को पुंखना
  शा. जीवराजजी भीकमचंदजी – लुणावा

- प्रासादी देवी की स्थापना, पार्श्वनाथ प्रभु के शिखर पर कलश की स्थापना, श्री गौतमस्वामीजी की छत्री पर कलश की स्थापना, गजराज पर आसीन होकर तोरण वांदना, संघवी परिवार को माला पहनाना
  शा. छगनराजजी नगराजजी वजावत परिवार – आहोर
- अधिष्ठायक गरूड यक्ष के गोखले पर कलश की स्थापना करना
  शा. बाबुलालजी टीलाजी – सांचोर
- अधिष्ठायिका निर्वाणा देवी के गोखले पर कलश की स्थापना करना
  शा. भूरमलजी ओटमलजी श्रीश्रीमाल – सायला
- कुमकुम के थापे का आलेखन करना
  शा. उम्मेदमलजी गरगाजी दांतेवाडीया – आहोर
- संघ पर केशर छिड़कना
  शा. किशोरमलजी जीवराजजी – आहोर
- प्रतिष्ठा के समय थाल बजाना
  शा. छगनराजजी कनीरामजी – आहोर
- माणक स्तम्भ स्थापित करना, प्रतिष्ठा के बाद श्री राजेन्द्रसूरिजी की प्रथम अष्टप्रकारी पूजा
  शा. मीठालालजी सरेमलजी कुहाड – काकीनाडा
- संघवी परिवार का साफा चुनडी द्वारा स्वागत करना, भगवान श्री शांतिनाथ, श्री सुमतिनाथ एवं श्री पार्श्वनाथ को मुकुट पहनाना
  शा. नारायणदासजी वसाजी छाजेड – केशवणा
- प्रतिष्ठा के बाद श्री भगवान का प्रथम पक्षाल
  शा. तेजराजजी हिम्मतमलजी धुडाजी मुथा – निर्दोल
- प्रतिष्ठा के बाद भगवान की प्रथम अष्टप्रकारी पूजा
  सेठ ओटमलजी जसराजजी – आहोर
- प्रतिष्ठा के बाद श्री गौतमस्वामीजी की प्रथम अष्टप्रकारी पूजा
  शा. मुन्नीलालजी फूलचंदजी तिलेसरा – गुंटुर
- प्रतिष्ठा के बाद भगवान की प्रथम आरती
  शा. ताराजी घेवरचंदजी – कराड
- प्रतिष्ठा के बाद भगवान का प्रथम मंगल दिवा
  शा. देवीचंदजी चन्दनमलजी हीराजी सोलंकी – विजयवाडा
- प्रतिष्ठा के बाद श्री गौतमस्वामीजी की प्रथम आरती
  शा. झूमरमलजी रिखबाजी वेदमुथा – आहोर
- प्रतिष्ठा के बाद श्री राजेन्द्रसूरिजी की प्रथम आरती
  शा. भँवरलालजी सोहनराजजी लुंकड़ (ग्रीनवुड कॉम्प्लेक्स) भीनमाल

श्री शांतिनाथ जैन मंदिर प्रतिष्ठोत्सव निमित्त व्यवस्था हेतु विभिन्न समितियाँ बनायी गयी थी -

* **भोजन व्यवस्था समिति** - श्री प्रेमराजजी जुहारमलजी परमार, श्री नेमीचंदजी सरदारमलजी चौपडा, श्री ऋषभकुमारजी बदामीलालजी जैन, श्री कांतिलालजी चुन्नीलालजी पारेख, श्री बाबुलालजी बोहरा (नागदा), श्री कांतिलालजी गेलडा (खाचरौद), श्री शेषमलजी गिरधारीमलजी (कल्याण), श्री पारसमणि (कराड), श्री रामरतनजी नारायणदासजी छाजेड (केशवणा), श्री नगराजजी प्रेमराजजी पुनमिया
* **यातायात समिति** - श्री सुकनराजजी मिश्रीमलजी, श्री बाबुलालजी भेरूलालजी जैन, श्री प्रवीणकुमार मीठालालजी परमार, श्री रमेश भाई थापर, श्री अशोककुमारजी कावेडीया, श्री कैलाशकुमारजी गांधी, श्री विमलकुमारजी जैन, श्री आसाराम सुथार, श्री किशोरजी गिरधारीमलजी जैन
* **पुछताछ समिति** - शा. सुकनराजजी पुखराजजी लुणिया, श्री पारसमलजी मीठालालजी परमार, श्री सुरेशजी चौपड़ा (बम्बई), श्री राज कुमार जैन, श्री अनिल राठौड, श्री सोहनराजजी सूरजमलजी सुराणा (सेवाडी), शा. जीवराजजी भीकमचंदजी (लुणावा), श्री राजेश वीराणी (निम्बाहेड़ा)
* **अर्थ व्यवस्था समिति** - श्री रमेशकुमारजी प्रेमराजजी परमार, श्री घेवरचंदजी तिलेसरा (कराड), श्री नगराजजी तोलाजी मुथा
* **लाइट-मंडप डेकोरेशन समिति** - श्री पारसमणि (कराड), श्री सोहनराजजी मीठालालजी परमार, श्री मोतीलालजी प्रेमराजजी परमार, श्री बाबुलालजी पारेख, श्री संजय जैन, श्री सुरेश पुनमिया
* **मंगलघर समिति** - श्री घीसुलालजी कुहाड (काकीनाडा), श्री महेन्द्रकुमारजी लक्ष्मीचंदजी राठौड, श्री अमृतलालजी पुखराजजी मेहता
* **साधु-साध्वी वैयावच्च समिति** - श्री जितेन्द्रकुमार डूंगरवाल (पारा), श्री विश्वास पाटणे, श्री महेन्द्रकुमार जैन (खाचरौद)

श्री मानपाड़ा जैन संघ द्वारा संघवी परिवार को प्रदान किए गए अभिनन्दन-पत्र की प्रति

॥ श्री शातिनाथाय नमः ॥

श्रेष्ठीवर्य, शासन प्रेमी संघवी जुगराजजी,
कांतिलालजी कुंदनमलजी भुताजी श्रीश्रीमाल वर्धमान
गोत्रीय परिवार आहोर निवासी के कर कमलों में सादर समर्पित

अभिनंदनपत्र

आराधना प्रेरक : वर्तमान काल में भरत क्षेत्र में तीर्थंकर परमात्मा के प्रत्यक्ष विचरण का विरह है। ऐसे में 'विषमकाले जिन बिम्ब जिनागम भवियण कुं आधारा' उक्ति के अनुसार भव्य जीवात्माओं के लिये जिन प्रतिमा एवं जिन आगम भाव वृद्धि का अनुपम आलम्बन है। जिन दर्शन, पूजन व वंदन कर आज भी कई भाग्यशाली जीवात्मा कर्मों की निर्जरा करते हुए मुक्तिपथ की ओर अग्रसर हो रहे हैं जिनालय एवं उपाश्रय का निर्माण करवा कर आप हमारे लिये आराधना के प्रेरक बने हैं।

परमादरणीय : राष्ट्रसंत, तीर्थप्रभावक, साहित्य मनीषी जैनाचार्य श्रीमद् विजयजयन्तसेन सूरीश्वरजी 'मधुकर' की पावन प्रेरणा व आशिर्वाद से आपने हमारे श्री संघ की विनंती को ध्यान में लेकर श्री शांतिनाथ जिन-मंदिर, श्री राजेन्द्रसूरि जैन ज्ञान-मंदिर का निर्माण करवाकर आपने पुण्यानुबंधी पुण्य का उपार्जन किया है।

जिनशासन प्रेमी : समय-समय पर आपके द्वारा जिनशासन प्रभावना के विविध कार्यक्रमों में आहोर से तिर्थाधिराज शत्रुंजय का छः 'रि' पालित संघ, विभिन्न चैत्यपरिपाटियों के आयोजन व विभिन्न सामाजिक क्षेत्रों में आपके द्वारा तन-मन-धन से सहयोग की प्रवृत्ति की हम हार्दिक अनुमोदना करते हैं।

हम आपके स्वस्थ, यशस्वी, सुदीर्घ जीवन की मंगलकामना करते हुए आपको यह अभिनन्दन-पत्र समर्पित करते हुए हर्ष व गौरव का अनुभव कर रहे है।

॥ शुभम् ॥

श्री शांतिनाथ जैन मंदिर प्रतिष्ठोत्सवदिन
संवत २०४९ माघ शुक्ल १३
शुक्रवार, दि. ५-२-१९९३

हम है
श्री श्वे. मू. पू. जैन संघ
मानपाड़ा (थाने)

(१) थाने के निकट मानपाडा में निर्माणाधीन जिनगृहमंदिर एवं उपाश्रय का भूमिशुजन करते हुए संघवी परिवार (२) श्री जे.के. संघवी व के.के. संघवी का बहुमान करते हुए थाना जैन (राजस्थानी) संघ के अध्यक्ष श्री चन्दनमलजी पूनमचंदजी एवं मैनेजिंग ट्रस्टी श्री बाबुभाई भीकमचंदजी जैन
(3) संघवी परिवार की बहनों का मानपाडा संघ द्वारा स्वागत

थाने (चित्तळसर मानपाडा में प्रभु एवं गुरुप्रतिमा प्रवेश एवं चल-प्रतिष्ठा समारोह ✤ वैसाख सुदि ५ दि. ७।५।९२

(1.) चांदी के रथ में प्रतिमायें विराजमान कर ग्रीनवुड काम्पलेक्स से शोभा यात्रा प्रारंभ (2.) मानपाडा श्री संघ द्वारा संघवी परिवार का स्वागत (3.) नगर प्रवेश का दृश्य, चित्र में अभिनंदन जैन मंडल दृष्टिगोचर ... प्रतिमा प्रतिष्ठित करते हुए संघवी परिवार

मानपाड़ा (थाना) में प्रतिष्ठोत्सव की चित्रमय झलकियां

दि. ३०-१-९३ से दि. ६-२-९३

आयोजक – आहोर निवासी संघवी कुन्दनमलजी भुताजी परिवार

प्रतिष्ठित मूलनायक श्री शांतिनाथ श्री सुमतिनाथ व श्री पार्श्वनाथ

नवनिर्मित
श्री शांतिनाथ जैन मंदिर
का बाहरी दृश्य

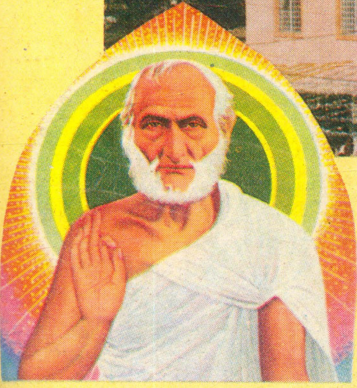

परमयोगी दादा गुरुदेव
श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी
जिनकी दिव्य कृपा व आशिष सदैव रही

प. पू. राष्ट्रसंत, तीर्थप्रभावक, साहित्य मनीषी
जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी 'मधुकर'
जिनकी पावन-मंगल-शुभ निश्रा में
भव्यातिभव्य प्रतिष्ठा का शानदार कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

रविवार दि. ३१-१-९३ को नवकारसी भीनमाल निवासी शा. भँवरलालजी, राजमलजी, उगमराजजी, सोहनराजजी लुक्कड (ग्रीनवुड कॉम्प्लेक्स) की ओर से सम्पन्न हुयी। उस निमित्त श्री राजस्थान जैन संघ - थाने की ओर से शा. भँवरलालजी लुक्कड का स्वागत करते हुए अध्यक्ष-श्री चंदनमलजी बलदौटा व श्री उत्तमचंदजी जैन

प्रतिष्ठा महोत्सव के चढावे बोले जानें के पूर्व जाजम बिछाने का मुहूर्त व आचार्य श्री द्वारा वासक्षेप

भगवान के मुनीम बनने का लाभ आहोर निवासी शा. ताराचंदजी भानाजी वेदमुथा ने लिया

चढावे बोलने वालों को माला पहिना कर बहुमान करते हुए शा. घेवरचंदजी छगनराजजी तलावत (अहमदाबाद) एवं तिलक से बहुमान करते हुए शा. शेषमलजी गिरधारीमलजी (आहोर)

प्रतिष्ठा महोत्सव के अंतर्गत राष्ट्रसंत जैनाचार्य के दर्शनार्थ कई राजनेताओं, विधायकों, नगरसेवकों एवं विशिष्ट महानुभावों का आगमन। चित्र में ठाणे जिला शिवसेना अध्यक्ष - धर्मवीर श्री आनंद दिघे पूज्यश्री से आशीर्वाद लेते हुए।

शोभायात्रा का विहंगम दृष्य

पूज्य आचार्य भगवंत की उपस्थिती में विधि विधान करते हुए श्री यतिजी

महोत्सव स्थल में अठारह अभिषेक का दृष्य

सुरत से विहार कर पधारी हुई श्रमणी-वृंद

संघवी परिवार की आग्रहभरी विनंती को स्वीकार कर पाटण से उग्र विहार कर साध्वीजी श्री प्रेमलताश्रीजी, पूर्णकिरणाश्रीजी, एवं कल्परेखाश्रीजी आदि ठाणा का पदार्पण

पूजन में उपस्थित आचार्य भगवन्त एवं जनसमुदाय

श्री अभिनन्दन जैन मंडल - थाने, जिनकी की सेवाऐं प्रतिष्ठोत्सव में सराहनीय रही

मूलनायक श्री शांतिनाथ भगवान को विराजमान एवं कलश, दंड ध्वजारोहण का लाभ संघवी कुंदनमलजी भुताजी परिवार ने लिया।

गणधर गौतमस्वामीजी की प्रतिमा को आहोर निवासी शा. वीरचंदजी धनाजी जीवावत परिवार विराजमान करते हुए।

दादा गुरुदेव राजेन्द्रसूरिजी की प्रतिमा को मानपाड़ा निवासी शा. मीठालालजी जुहारमलजी परमार परिवार (गेनड़ी–राज.) विराजमान करते हुए।

गजराज पर आसीन होकर तोरण बांदते हुए आहोर निवासी – शा. छगनराजजी नगराजजी वजावत परिवार

श्री राजेन्द्र सूरि ज्ञान मंदिर में गुरुदेव के चित्र स्थापित करते हुए आहोर निवासी शा. छगनराज भुताजी श्री श्रीमाल परिवार

शा.भंवरलालजी, उगमराजजी, सोहनराजजी लुंकड (ग्रीनवुड काम्प्लेक्स) परिवार का प्रतिष्ठा में तन-मन-धन से दिये गए सहयोग हेतु, संघवी परिवार स्वागत करते हुए।

मंदिर के आर्किटेक्ट श्री सितारामजी (श्रीराम कंस्ट्रक्शन) का हार, श्रीफल, शॉल एवं प्रशस्ति-पत्र द्वारा अभिनंदन करते हुए संघवी परिवार।

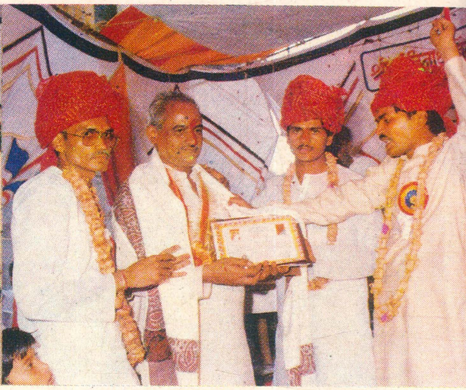

सहयोगी श्री भूरमलजी जैन का संघवी परिवार द्वारा स्वागत

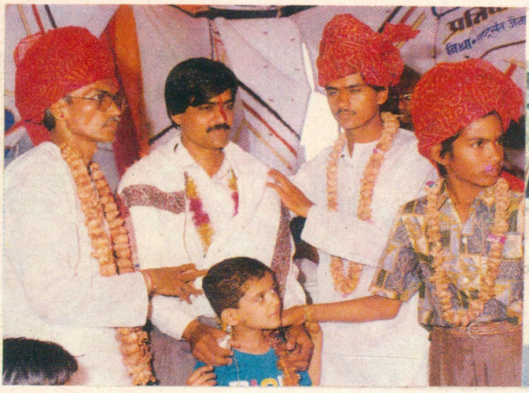

डॉ. हेमराज पोरवाल एवं डॉ. श्रीमती अंजना पोरवाल का संघवी परिवार अभिनंदन करते हुए।

दीक्षार्थिनी मंजुलाबेन का संघवी परिवार बहुमान करते हुए।

संघवी परिवार को शाल, साफा, श्रीफल, हार एवं अभिनंदन-पत्र अर्पित करते हुए श्री मानपाड़ा जैन संघ प्रमुख।

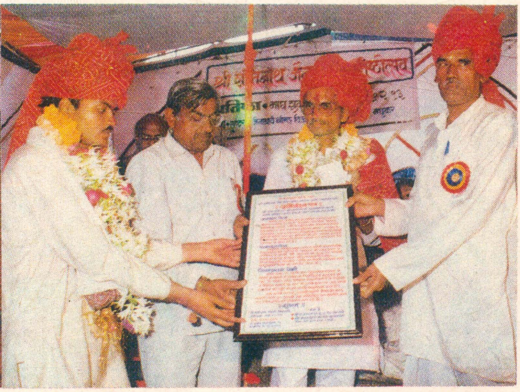

'श्री राजस्थान जैन संघ - थाने की ओर से' संघवी परिवार का स्वागत एवं अभिनंदन-पत्र अर्पित करते हुए संघ प्रमुख

शा. चम्पालालजी हिम्मतमलजी चौपड़ा (आहोर) संघवी परिवार को तिलक करते हुए।

आहोर निवासी शा. छगनराजजी नगराजजी वजावत (तनुकु) परिवार संघवी परिवार का माला पहिनाकर स्वागत करते हुए।

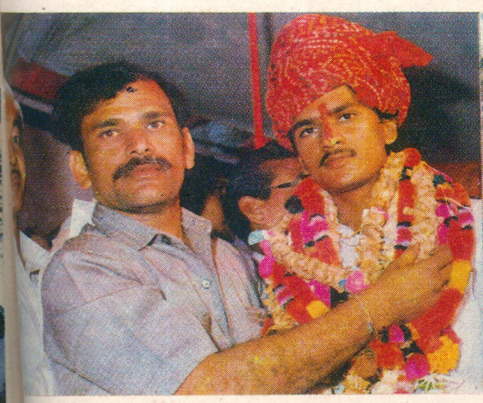

शा. नारायणदासजी वसाजी छाजेड़ परिवार (केशवणा) संघवी परिवार का साफा चुनड़ी हार से स्वागत करते हुए।

शा. गीरधारीमलजी जुहारमलजी परिवार (आहोर) संघवी परिवार का श्रीफल एवं रूपानाणा द्वारा स्वागत करते हुए।

पू. आचार्य भगवंत को काम्बली अर्पित करते हुए धाणसा निवासी शा.नगराजजी तोलाजी मुथा परिवार।

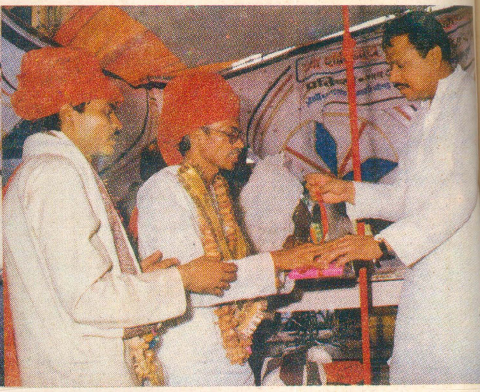

'मांसाहार १०० तथ्य' (मराठी) को लोकार्पित करते हुए अ. भा. त्रिस्तुतिक संघ के उपाध्यक्ष एवं परिषद के वरिष्ट उपाध्यक्ष प्रसिद्ध उद्योगपति - श्री चैतन्यजी काश्यप

संघवी परिवार के अभिनंदन-समारोह में उपस्थित जन समुदाय

अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के अध्यक्ष - श्री सेवंतीभाई मोरखीया संघवी परिबार का बहुमान करते हुए।

अभिनंदन समारोह के पश्चात संघवी परिवार।

मानपाड़ा मंडन श्री शान्तिनाथ भगवान स्तवन

(राग : माता मरूदेवी ना नंद, देखी....)

रचयिता – मुनि श्री सम्यग्रत्नविजयजी म. सा.

माता अचिराजी के लाल-लाल, तिन भूवन के नायक प्रभुजी वंदन वार हजार
नगर थाना के परिसर माही, मानपाड़ा अेक स्थान
पाप पडल विखेरवा काजे, मंदिर देव विमान ॥१॥ माता...

ड़ाभअणी ज बिंदु समअे, जीवन जाणी ताम
शान्ति जिनेश्वर सुमति पारस, स्थाप्या गौतमस्वाम ॥२॥ माता...

न्याय द्रव्य ने खर्चि भावे, संघवीजी परिवार
तिन योग थी जिनवर पूजा, करतां भव निस्तार ॥३॥ माता...

नाथ निरंजन निर्विकारी, मुख मुद्रा मनोहार
थरथर ध्रुंजे अरिदल सघला, नाठा विषय विकार ॥४॥ माता...

भव अटवी मां भ्रमण करतां, मलीया मुझ किरतार
गगन मंडल मां कीर्ति गाजे, पूजे सुर नर नार ॥५॥ माता...

वाजा वाजे प्रभुना द्वारे, वीस चार नौ साळ
नर नारी सहु मंगल गावे, माघ तेरस शुभ मास ॥६॥ माता

कुंदनमल जुगराज कान्ति, सूरि राजेन्द्र सु पसाय
वंदन करके प्रतिष्ठा किनी, जयन्तसेनसूरि राय ॥७॥ माता...

दया तणा दातार प्रभुजी, दया धर्म बतलाय
नाम जपंता निर्मल होवे, सम्यग्रत्न सदाय ॥८॥ माता वंदन वार हजार

महावीर महान थे दुनिया की शान थे
दयालु भगवान थे ज्ञानी शीलवान थे
अहिंसा के विधान थे शंका के समाधान थे
निर्मोह के वरदान थे त्यागी गुणवान थे

सौभाग्यमल जैन वकील, रतलाम

थाना नगरे

"श्री मानपाड़ा शान्तिनाथ प्रभु"

(प्रतिष्ठा महोत्सव)

रचयिता : भँवरलाल एम. जैन, शिवगंज (वरली - बम्बई)

[तर्ज - चालो .... राजस्थानी गीत]

चालो मानपाड़ा चालो, चालो मानपाड़ा चालो,

सोलवा जिनराया त्यां बिराजे म्हारा शान्तिजी
बिराजे म्हारा शान्तिजी, सब मिल जय बोलो

प्रभु री मुरत मोहन गारी - २
आवे दर्शन ने नर-नारी - २

सहु संघ रां हैया में, बिराजे म्हारा शान्तिजी,
बिराजे म्हारा शान्तिजी, सब मिल जय बोलो,

माता अचिरा देवी रा जाया - २
पिता विश्वसेन कुल राया - २

हस्तीनापुर नगरी रा, बिराजे म्हारा शान्तिजी,
बिराजे म्हारा शान्तिजी, सब मिल जय बोलो

काया कंचन वरणी तो पाया - २
आयु लाख वर्ष रा जिन राया - २

चालीस धनुष तन रा, बिराजे म्हारा शान्तिजी
बिराजे म्हारा शान्तिजी, सब मिल जय बोलो

माघ सुद तेरस चौदश दिन आया - २
निश्रा जयन्तसेन सूरीश्वर राया - २

प्रतिष्ठा रा ठाठ में तो, बिराजे म्हारा शान्तिजी
बिराजे म्हारा शान्तिजी, सब मिल जय बोलो

गुरु गौतम राजेन्द्र मन भाया - २
"भँवर" चरणों में शिश झुकाया - २

यक्ष-यक्षिणी रे साथे, बिराजे म्हारा शान्तिजी
बिराजे म्हारा शान्तिजी, सब मिल जय बोलो

પ્રેરણાત્મક નવકાર

પ્રવચનકાર - આચાર્ય શ્રીજયન્તસેનસેનસૂરિજી

ભાવાનુવાદ - મુનિશ્રી પ્રશાન્તવિજયજી

મહામંત્ર નવકારની મહિમાનું ગાન અનંત તીર્થંકર ગણધર અને પૂર્વધર આચાર્યોએ ગાયું છે. એનું સ્વરૂપ અને એની ગંભીરતા અલૌકિક છે. આ મહામંત્ર પોતાની રીતેજ સ્વયં સંપૂર્ણ છે. જે આ અનન્ય મંત્રનો સહારો લે છે. તેને અન્ય કોઈ મંત્રની સહાય લેવાની આવશ્યકતા જ ઉભી થતી નથી. ત્રાજવાના એક પલ્લામાં જો આ મહામંત્ર રાખવામાં આવે અને બીજા પલ્લામાં સંસારના સમસ્ત મંત્રો રાખવામાં આવે છતાંયે આ મહામંત્રનું પલ્લું નમેલું જ રહેશે.

સંસારનો સઘળોય વૈભવ અપૂર્ણ છે, જો આ મહામંત્રને ન શીખી લઈએ તો. આજ એક મહામંત્ર એવો છે જો જીવનમાં સફળતા અને સંપૂર્ણતા પ્રદાન કરે છે. આ મંત્રને કશાયની અપેક્ષા નથી છતાં બધા બુદ્ધિમાનો આ મંત્રની અપેક્ષા રાખે છે. આવો સવૈ ગુણ સંપન્ન અને સર્વ વિદ્યા સંપન્ન મહામંત્ર નવકાર પુણ્યોદય વિના મળવો ખૂબજ દુર્લભ છે. જ્યારે મહામંત્ર જીવનમાં મળી જાય છે ત્યારે જન્મોજન્મના પુરૂષાર્થ સફળ થઈ જાય છે.

દૂર કરે અંધકાર

આ મહામંત્ર જીવનમાં દિશાનું દર્શન કરાવે છે. આપણને આવશ્યક/અનાવશ્યકનો ભેદ સમજાવે છે. હેય-ઉપાદેય-અને જ્ઞેયનું જ્ઞાન કરાવે છે. જેણે નવકાર શીખી લીધો તેણે બધુંજ શીખી લીધું. જીવનમાં જો નવકારની સ્થાપના થઈ જાય તો સર્વત્ર પ્રકાશજ પ્રકાશ છે. ત્યાં અંધકારને સ્થાનજ ન મળે. અંધકાર તો ત્યાં સુધીજ રહે છે. કે જ્યાં સુધી પ્રકાશ નથી આવતો. સ્વયં પ્રકાશવાન મહામંત્ર નવકાર જીવનમાંથી અંધકારને દૂર ભગાવી દે છે.

એક ગામમાં ગુરૂ-શિષ્યે સ્થિરતા કરી હતી. રાતનો વખત હતો. અચાનક ગુરૂએ શિષ્યને આદેશ કર્યો "વત્સ ! પેલી રૂમમાં મારી થેલી પડી છે એ લઈ આવ" શિષ્ય રૂમ તરફ ગયો. રૂમમાં અજવાળું નહિવત હતું. અંદર એક દોરડી પડી હતી. શિષ્યને થયું કે આ સાપજ છે. તે તરતજ પાછો ફર્યો. ગુરૂદેવને કહ્યું " ગુરૂદેવ ! રૂમમાં સાંપ છે. મને બીક લાગે છે." ગુરૂજીએ તેને ગારૂડીમંત્ર આપ્યો અને કહ્યું "જાવ આ મંત્ર ત્યાં જઈને બોલજે. મંત્ર સાંભળતાંજ સાંપ ત્યાથી રવાના થઈ જશે." શિષ્ય રૂમ પાસે આવ્યો. ગારૂડી મંત્ર ભણવા માંડ્યો છતાં મનોનીત સાંપ તેના સ્થાનથી સહેજેય ખસ્યોજનહી.

તે ફરી ગુરૂદેવ પાસે ગયો. ગુરૂદેવ કહ્યું "જેને તમે સાંપ માની બેઠા છે તે ખરેખર સાંપજ નહીં હોય" જાવ, આ દીપક લઈ જઈને સારી રીતે જુઓ કે ત્યાં શું છે ? શિષ્ય તેની સાથે દીપક લઈ ગયો. તેણે દીપકના અજવાળામાં જોયું તો તેને સાંપને બદલે દોરડી દેખાઈ. અજવાળાથી તેને સાચું દેખાયું તે નિર્ભય થઈ અંદર ગયો.

ઉજ્જ્વળ જીવન

જ્યાં સુધી નવકારનો દીપક મળતો નથી ત્યાંસુધી ભ્રમ ભાગંતો નથી અને જ્યાં સુધી ભ્રમ ભાગંતો નથી ત્યાંસુધી ભય પણ દૂર થતો નથી કેમ કે સત્યતાનું દર્શન જ થતું નથી. ભ્રમ હંમેશા આપત્તિઓ ઉભી કરે છે. ભ્રમને ભગાડવા માટે અને યથાર્થ જ્ઞાન મેળવવા માટે નવકાર રૂપ દીપક આપણા હૃદય મંદિરમાં પ્રજ્વલિત કરવો પડશે. હૃદય મંદિરમાં અજવાળું પથરાઈ જવાથી આપણાં નકામાં ચક્કમારવા બંધ થઈ જશે. માણસની અથડામણનું એક કારણ છે તેના હૃદય મંદિરમાં અંધકાર જ છે. અંધકારમાં તો છતી આંખેય માણસ આંધળો ભીત થઈ જાય છે. જો અજવાળું જ ન હોય તોયે જોવાની શક્તિવાળો આંખોથી પણ દેખાશે નહી. જો આ મહામંત્રનાં અજવાળાં આપણી અંદર પ્રસરી જાયતો પછી અથડામણનો કોઈ સવાલજ ઉપસ્થિત થતો નથી. "સાંઈ ઈણસંસારમેં ભાઁત ભાઁત કે લોગ" આ સંસારના દરેક માણસનો સ્વભાવ જુદો-જુદો હોય છે. બધાજ માણસોની પ્રવૃત્તિઓ પણ જુદી જુદી છે. જો આ સંસારમાં વ્યવસ્થિત પણે જીવન જીવવું હોય તો સલાહ નવકારથીજ લેવી પડશે. જીવનનો રાહ નવકાર જ દેખાડે છે. સાચો સલાહકાર નવકાર જ છે. સંસારની સલાહ અથડામણવાલી છે. નવકાર સ્થિરતાની જ સલાહ આપે છે. પરમેષ્ઠિ ભગવંતોએ અણમોલ સલાહ આપીને આપણા જીવનને સુખી બનાવવામાં કોઈ જાતની કસર કરી નથી. તેમની સલાહથી જીવન ઉજ્વલ નિર્મળ અને ઉન્નત બનશેજ.

ભવરોગ નાશક

નમો અરિહંતાણં એ પદ કેટલી સુંદર સલાહ આપે છે ! તેમનીજ સલાહથી જીવન સાચી દિશામાં વળશે. અરિહંતની સલાહને જો અવગણીને સંસારીની સલાહમાં ફસાઈ ગયા તો સમજી રાખજો કે આ સંસાર ચક્ર ક્યારેય દૂર થનાર નથી અને આપણે વાસ્તવિક માર્ગેથી વંચિત જ રહી જઈશું.

મહામંત્ર નવકાર આપણા સંપૂર્ણ જીવનની જવાબદારી ઉઠાવવા તૈયારજ છે છતાં, આપણે મહામંત્રને આપણું જીવન સમર્પિત કરવાજ તૈયાર નથી. જો આપણે નવકાર નજીક જઈએ તો એ નવકાર આપણને સંભાળી લેવા તૈયાર જ છે. જે સમતા-શાંતિને અપનાવે છે. તે ખરેખર સંસારમાં રહેવા છતાં સંસારથી દૂર છે અને નવકારની નજીક છે. તે સુખી છે અને ભાગ્યશાળી પણ છે.

આ મહામંત્રનો એકેક અક્ષર પ્રભાવશાળી છે. એમાં જીવંત તત્વો ભર્યાં પડ્યા છે. આમ તો જોવા જઈએ તો એ છે, એકદમ સીધો સાધો અને સરળ મંત્ર છોકરાથી માંડીને ડોકરા (ડોશા) એટલે કે બધા તેને સરળતાથી બોલી શકે છે. છતાં એમાં મહાન તાકાત છુપી છે. આપણે એ શક્તિઓને ઢંઢોળવી છે. આપણા જીવનમાં તેને પ્રગટ કરી દેવી છે.

મહામંત્ર અત્યારે પણ આપણને સહયોગ દેવા તૈયારજ છે. આવશ્યકતા છે માત્ર આપણી તૈયારીઓની. શું આપણે એ મહામંત્રની સહાયતા લેવા તૈયાર છીએ ? ડોક્ટર દર્દીનો મિત્ર હોય છે. દર્દીએ તે ડોક્ટર પાસે જવું જોઈએ. દર્દની દવા પણ કરાવવી પડે. આપણે બિમારતો જરૂર છીએ. છતાં આપણે જો ડોક્ટર પાસે ન જઈએ, તેમની દવા ન લઈએ. તેમની સલાહ જ ન અનુસરીએ, તો શું થાય ? જવાબ નજર સામે જ છે ને ! આપણી બિમારી દૂર થવાની નથી. નવકાર મહામંત્ર પાસે પણ ભવરોગ નાશક રામબાણ દવા છે. તે દવા જો આપણે પણ નહી લઈએ તો આપણો ભવરોગ ક્યારેય દૂર નહી થાય.

મહામંત્રનું ઉચ્ચારણ હંમેશા શુદ્ધજ કરવું જોઈએ. અશુદ્ધ ઉચ્ચારથી અર્થનો અનર્થ થઈ જશે. હંમેશા સાચુંજ લખવું જોઈએ અને સાચુંજ વાંચવું જોઈએ. એ વિષયમાં એક સુંદર મજાનું નાનકડું વાંચો આ દ્રષ્ટાન્ત.

નહિંતર સજા થશે

એકવાર એક ન્યાયાધીશે પોતાના મકાનની બહારની બાજુની ભીત ઉપર એક સૂચના લખાવી. તે આ પ્રમાણે હતી. " અહિં ગંદગી કરવી નહી, કરનારને સજા થશે." પેઈન્ટરે બોર્ડ તૈયાર કરી ભીત ઉપર ટીંગાડી દીધું. બસ, ત્યારથી જ બધા લોકોએ દિવાલ આગળ કચરો ઠાલવવો શરૂ કર્યો. પહેલાં જેટલી ગંદગી થતી હતી તેનાથી વધારે ગંદગી હવે થવા જ માંડી.

છેવટે ચોકીદારે બધા ગંદગી કરવાવાળા લોકોને પકડવા માંડ્યા. પકડી-પકડીને બધાને ન્યાયાધીશ સામે રજૂ કર્યા. ન્યાયાધીશના પૂછવાથી લોકોએ કહ્યું, અમે તો અક્ષરશઃ સૂચનાનું પાલન જ કર્યું છે. નહિં કે ઉલ્લંઘન, ત્યાંતો ગંદગી કરવાની જ સૂચના આપવામાં આવી છે.

ન્યાયાધીશે ચોકીદારને મોકલી સૂચના-બોર્ડ મંગાવ્યું. બોર્ડ વાંચીને ન્યાયાધીશને પણ અચરજ થયું બોર્ડમાંજ લખ્યું હતું "અહિં ગંદગી કરવી, નહી કરનારને સજા થશે." ન્યાયાધીશને બરાબર ખ્યાલ આવી ગયો કે અહિં ભૂલ તો લોકોની નથી. પેઈન્ટરે જ અલ્પવિરામ નહીંને ઠેકાણે કરવી પછી કરી દીધું છે. તેથીજ બધો અનર્થ સર્જાઈ ગયો છે. તેમણે લોકોને છોડી દીધા. પેઈન્ટરને બોલાવી ભૂલ સુધરાવી દીધી. બોર્ડ વ્યવસ્થિત થઈ ગયું ત્યાર પછી તે ભીત આગળ કોઈએ ગંદગી ન કરી.

શબ્દરચના નવકારની

મહામંત્ર નવકારમાં કુલ મળીને અડસઠ અક્ષર છે. કુલ પદ નવ છે. નવપદના બે વિભાગ છે. પાંચ પદોવાળું એક અને બીજું ચાર પદ યુક્ત. ચાલો, આ અક્ષરોથી મળતા સંકેત તરફ વિચારણા કરીએ. પાંચ પદના અક્ષર પાંત્રીશ છે. બીજા પદના તેત્રીશ અક્ષર છે. એમ નવે પદના કુલ અક્ષર અડસઠ છે. અડસઠમાં બે આંકડા = ૧૪ બન્ને આંકડાનો સરવાળો ચૌદ થાય છે. તેનો એકદમ સરળ અર્થ એ થાય છે આ અડસઠ અક્ષરીય નવકાર ચૌદપૂર્વોના સારરૂપ છે. જે નવકાર મંત્ર છે તેનો સાર એટલેજ આ ચૌદના આંકડાઓનો સરવાળો ૧ + ૪ = ૫ પરમેષ્ઠિ છે. તેઓને નવકારના પ્રથમ પાંચ પદો વડે ક્રમશઃ નમસ્કાર કરવામાં આવ્યો છે.

નવકારના પહેલાં પાંચ પદો કુલ અક્ષર પાંત્રીશ છે. પાંત્રીશના બંન્ને આંકડાનો સરવાળો ૩ + ૫ = ૮ થાય છે. આ પરમેષ્ઠિ ભગવંત આઠેય કર્મોના ક્ષય કરીને સર્વોચ્ચ પદને મેળવનાર છે. અને સિદ્ધ, બુદ્ધ, પારંગત, પરંપરાગત થઈ લોકાગ્રે બિરાજમાન થનાર છે. એ જે રીતે નવકારના શેષ ચારપદોના કુલ તેત્રીશ છે. તેના બંન્ને આંકડાનો સરવાળો ૩ + ૩ = ૬. આ છનો આંકડો ષડરિપુ તરફ સંકેત કરી જાય છે. કામ-ક્રોધ-મદ-મોહ-લોભ-મત્સર એ છ આત્માના મહાન શત્રુ છે. સાધનામાર્ગે આગળ વધવા એ છ ની ઉપર વિજય મેળવવો સાધકને માટે અત્યન્ત આવશ્યક છે.

આજ રીતે પાંત્રીશના બંન્ને આકડાનો ગુણાકાર ૩ × ૫ = ૧૫ થાય છે. કર્મભૂમિઓ પંદરજ છે. એની વિશેષતા છે કે તીર્થંકર પરમાત્મા કર્મભૂમિમાંજ થાય છે. તેત્રીશના બેય આંકડાનો

ગુણાકાર ૩ × ૩ = ૯ થાય છે. એ નવપદની જ સંસારમાં સર્વશ્રેષ્ઠતા બતાવે છે. હવે ૧૫ + ૯ = ૨૫ થાય છે.. આ અંક તીર્થંકરોંની સંખ્યાનો પ્રકાશક છે. ભરતક્ષેત્રમાં એક કાળ ખંડને વિષે ચોવીશજ તીર્થંકરો થાય છે. ઓછા વત્તા નહી.

ચાલો હવે આપણે નવકારના અક્ષરોથી મળતા સંકેતનું જ્ઞાન મેળવીએ.

સાંકેતિકજ્ઞાન

નવકારમંત્રનો પહેલો અક્ષર "ણ" છે. નવકારમાં કુલ ચૌદવાર "ણ' આવ્યો છે. પ્રાકૃત ભાષામાં "ણ" થી એક શબ્દ બને છે. "ણ" અર્થાત જ્ઞાન. આ "ણ" ચૌદ પૂર્વોના જ્ઞાનનું પ્રતિક છે. અને એ આપણને સ્વાધ્યાય વિગેરે દ્વારા જ્ઞાનની આરાધના કરવાનો સંદેશ આપે છે.

હવે "મ"ની વિચારણા કરીએ, નવકારમંત્રમાં નવ વાર "મ" આવે છે. પ્રથમ પાંચ પદમાં પાંચવાર, છેલ્લા ચાર પદમાં ચાર વાર, પહેલા પાંચ પદોમાં આવેલ "મ" પાંચ મહાવ્રતોના પાલનની સમજણ આપે છે. છેલ્લા ચાર પદોમાં ચાર વાર આવેલ "મ" કહે છે કે લોકમાં ઉત્તમ એવાં મંગળ ચારજ છે. અહિંસા-સત્ય-અસ્તેય-બ્રહ્મચર્ય અને અપરિગ્રહ એ પાંચ મહાવ્રત છે. અરિહંત-સિદ્ધ-સાધુ અને કેવળી કથિત ધર્મ એ ચાર મંગળ છે.

એજ રીતે નવકાર મંત્ર માં "ર" ત્રણ વાર આવ્યો છે. એ ત્રણે રત્નો તરફ સંકેત કરે છે. સમ્યગ્દર્શન, સમ્યગ્જ્ઞાન અને સમ્યગ્ચારિત્ર આ ત્રણ રત્નો છે. આને રત્નત્રયી પણ કહેવાય છે. આ સિવાયનાં અન્ય રત્નોંને ધારણ કરનાર કિંચિતરૂપે જ સંસારથી પાર ઉતરે છે. આ રત્નોં શાશ્વત છે. બાકીનાં બધા અશાશ્વત છે.

હવે 'ત' લઈએ, 'ત' માત્ર એકજ વાર આવે છે, તેથી એવું ગ્રહણ કરવું જોઈએ કે તત્વ સ્વરૂપ ધર્મ એકજ છે. અને તે આત્મધર્મ છે. આ આત્મધર્મની સર્વોત્કૃષ્ટ વ્યાખ્યા એકજ છે. "વત્થુસહવો ધમ્મો." વસ્તુનો સ્વભાવ એજ ધર્મ છે અને તત્વ પણ.

'સ' આઠ વાર આવ્યો છે. એ આઠ વાર આવેલ 'સ' સંકેત કરે છે કે સિદ્ધિઓ આઠ છે. અણિમા, મહિમા, લઘિમા, ગરિમા, ઈશિત્વ, પ્રાકામ્ય, વશિતા અને પ્રાપ્તિ.

આજ રીતે નવકાર મંત્રમાં એકવાર આવેલ 'ધ' ધર્મક્રિયાની વાત સમજાવે છે. ત્રણ વખત આવેલ "ય" ત્રણ યોગ, મનોયોગ, વાક્યોગ એ ત્રણેય યોગ ઉપર વિજેતા બનવાનો સંદેશ આપી રહ્યા છે.

નવ વાર આવેલ "વ" બ્રહ્મચર્યની નવ વાડોના પાલનની પ્રેરણા આપે છે. બ્રહ્મચર્ય એજ જીવન છે. અબ્રહ્મ એટલેજ મૃત્યુ. બ્રહ્મચારી અમરતા અખંડતા તરફ આગેકુચ કરે છે તેને તો દેવોના દેવ ઈન્દ્રો પણ નમન કરે છે.

હવે "લ" તરફ ધ્યાન દઈએ, નવકાર મંત્રમાં "લ" ત્રણ વાર આવ્યો છે. એ ત્રણ લોક-સ્વર્ગ અને મૃત્યુ અને પાતાળનું પ્રતિક છે. સંસારી જીવ ત્રણ લોકમાં જ રહીને પોતાની અજ્ઞાનતા વશ ભ્રમણ કરે છે.

'ઝ' એકજ વાર આવ્યો છે. તે ઝાણ એટલે કે ધ્યાનનું પ્રતિક છે. આત્મધ્યાનની તાકતથીજ

જીવ સંસાર ભ્રમણથી છૂટકારો મેળવે છે. અને મોક્ષ પામે છે. કહેવામાં આવ્યું છે કે –

"આતમ ભાવના ભાવતાં, જીવ લહે કેવળજ્ઞાન રે." આ મહામંત્રમાં 'ચ' બે વખત આવ્યો છે. એ બે પ્રકારના ચારિત્ર તરફ સંકેત કરે છે. દેશવિરતિ ચારિત્ર અને સર્વ વિરતિ "ચારિત્ર. દરેક આરાધકે ઉત્કૃષ્ટથી તો સર્વ વિરતિ ચારિત્રનું પાલન કરવું જોઈએ. જો કદાચ એટલી બધી શક્તિ ન હોય તો દેશવિરતિ ચારિત્રનું પાલન તો અવશ્ય રૂપથી કરવું જોઈએ. એ સાચુંજ છે ને કે ચારિત્ર જ ધર્મ છે. ચારિત્ર વિના આત્માનું કલ્યાણ નથી. અવિરત અવસ્થામાં માનવ જીવન વ્યતીત કરી દુર્ગતિમાં જવાની અપેક્ષાએ વ્રત ધારણપૂર્વક દેહ-ત્યાગ પછી દેવ-મનુષ્ય વિગેરે સદ્‌ગતિઓમાં જવું વધારે સારૂં છે. તડકામાં તપવા કરતાં વૃક્ષની શીતળ છાયામાં વિશ્રામ કરવો વધારે સારો છે.

હવે આપણે નવકાર મંત્રમાં આવેલા "પ" તરફ ધ્યાન દોરીએ. અહિં "પ" ચાર વાર આવ્યો છે. એ પુન્ય-પાપની ચતુર્ભંગીનું જ્ઞાન કરાવે છે. એ ચતુર્ભંગી આ પ્રમાણે છે.

૧. પુન્યાનુબંધી પુણ્ય ૨. પુન્યાનુબંધી પાપ. ૩. પાપાનુબંધી પુણ્ય ૪. પાપાનુબંધી પાપ.

આ ચતુર્ભંગીમાંથી પહેલા ભાગ રૂપ "પુણ્યાનુબંધી પુણ્ય" જ ઉપાદેય છે. પુણ્યના પ્રભાવે જ જીવ પોતાનો અંતિમ વિકાસ સાધી સિદ્ધાલયમાં બિરાજમાન થઈ જાય છે. અને જન્મ-મરણના ચક્રમાંથી છૂટી જાય છે. એ રીતે કદાચ પુણ્યાનુબંધી પાપ પણ ઉપાદેય જ છે. પણ...

પાપાનુબંધી પાપ અને પાપાનુબંધી પુણ્ય એમ ત્રીજો અને ચોથો ભાગો તો સર્વથા પાપના જ અનુબંધવાળા હોવાથી વર્જ્ય એટલેકે હેય જ છે. નવકાર મંત્રમાં બે વાર આવેલ "ક" કર્મ પ્રકૃતિ અને આવશ્યક ક્રિયાનો દ્યોતક છે, સામાયિક ચતુર્વિંશતિ, ગુરૂવંદન, પ્રતિક્રમણ, કાયોત્સર્ગ અને પ્રત્યાખ્યાન એ છ આવશ્યક જીવને કર્મ પ્રકૃતિઓની જાળમાંથી છોડાવનાર છે.

એજ પ્રમાણે એકજવાર આવેલ "દ" એ જ્ઞાન કરાવે છે કે જગતમાં એકજ વીતરાગ દેવ ઉપાસ્ય છે. અન્ય કોઈ નહીં. વીતરાગ દેવજ સુદેવ છે. કેમકે તેઓ રાગ વિગરે દોષરહિત સર્વજ્ઞ અને મોક્ષ માર્ગના નેતા છે. તે દેવાધિદેવ છે. સ્વર્ગના દેવો પણ એમના ચરણે નમે છે.

નવકાર મંત્રમાં "જ" એકજવાર આવ્યો છે. તેનાથી એ શિખામણ લેવી જોઈએ કે જગત સ્વભાવથી પરિવર્તનશીલ છે. આ જગત મૂળ ષડદ્રવ્યાત્મક છે. તે છઃ દ્રવ્યો - ૧ ધર્માસ્તિકાય, ૨. અધર્માસ્તિકાય ૩. જીવાસ્તિકાય ૪. આકાશાસ્તિકાય ૫. પુદ્‌ગલાસ્તિકાયની અને ૬ કાલ. આમાં જીવાસ્તિકાય અને પુદ્‌ગલાસ્તિકાયની એ વિશેષતા છે કે તે બન્ને સ્વભાવ પરિણમન પણ કરે છે અને વિભાવ પરિણમન પણ કરે છે. તેમના વિભાવ પરિણમનના કારણે જ આ સંસાર ચક્ર ચાલી રહ્યું છે. બાકીનાં ચારેય દ્રવ્યો સ્વભાવ પરિણમન જ કરે છે. વીતરાગ અવસ્થામાં એટલે અરિહંતપણામાં અને સિદ્ધપણામાં જીવ સ્વભાવ પરિણમનમાંજ રમે છે. સ્વભાવ પરિણમનથીજ જીવ સુખી થાય છે. સંસારમાં રહેલા સંસારી જીવો દુઃખી એટલા માટે છે કે તેઓ વિભાવ પરિણમન કરી રહ્યા છે.

નવકાર મહામંત્રમાં બે વાર આવેલા "ગ" માંથી પહેલો "ગ" ગુરૂતત્વની ઓળખાણ કરવાનું કહે છે. કેમકે ગુરૂ વિના જ્ઞાન નથી. ગુરૂજ પરમતત્વની પ્રાપ્તિ કરાવે છે. એજ કારણે પ્રાર્થના સૂત્ર "જયવીયરાય" માં વીતરાગ દેવને "જગગુરૂ" નામથી સંબોધ્યા છે. ગુરૂતત્વની અપાર મહિમા છે. જે બીજા "ગ" છે, તે ગુણાનુરાગી બનાવાની પ્રેરણા કરે છે. પોતાના હિતેચ્છુ જીવોએ સદા ગુણાનુરાગી

બનવું જોઈએ. ગુણાનુરાગી માણસ પોતાના ગુણભંડારને સમૃદ્ધ કરે છે. પરમાત્માને નમસ્કાર પણ એમના ગુણો મેળવવા માટેજ કરવામાં આવે છે ને તેથીજ "મેરી ભાવના" કાવ્યમાં એ કહેવામાં આવ્યું છે કે -

"ગુણીજન કો નિત દેખ હૃદય મેં, મેરે પ્રેમ ઉમડ આવે,
બને જહાં તક ઉનકી સેવા, કરકે યહ મન સુખ પાવે"

નવકારમાં 'હ' કેવળ એકજવાર આવ્યો છે. તેથી ખ્યાલ આવે છે કે કેવળ એક હિંસાના ત્યાગમાં અર્થાત્ અહિંસાવ્રતમાં પાંચેય મહાવ્રતોનો સમાવેશ થઈ જાય છે. પાંચેય મહાવ્રતોનો સાર અહિંસા જ છે. બીજા બધાં મહાવ્રતો અહિંસા વ્રતનાંજ પૂરક છે. અસત્યનો ત્યાગ, ચોરીનો ત્યાગ, મૈથુનનો ત્યાગ, અને પરિગ્રહનો ત્યાગ. અહિંસાના સંપૂર્ણ અને નિર્દોષ પાલન માટેજ છે. તેથીજ કહેવાય છે કે 'અહિંસા પરમ ધર્મ છે.'

મહામંત્ર નવકારમાં 'અ'. પણ એજવાર આવેલ છે. એ અનેકાન્તવાદનો દ્યોતક છે. અનેકાન્તવાદ સમસ્ત જૈન દર્શનનો પ્રાણ છે. એમાંજ સમસ્ત વૈચારિક-દાર્શનિક સમસ્યાઓનાં સમાધાનની ચાવી છે. એ સાચો વિચાર કરવાની પદ્ધતિ શીખવાડે છે. એ વચન સાપેક્ષ સત્યનું પ્રતિપાદન કરે છે અને હઠાગ્રહ છોડવાની પ્રેરણા કરે છે. સંસારના સમસ્ત વાદ ભલે પછી તે દાર્શનિક હોય કે રાજનૈતિક, અનેકાન્તવાદના માધ્યમેજ હલ થશે. શરત એટલીજ છે કે માણસે પોતાની હઠ અંને સ્વાર્થ છોડવો પડે. જો બધાજ આ શરત સ્વીકારી લે તો આખાયે સંસારમાં શાંતિનું સામ્રાજ્ય છવાઈ જાય.

"આ" પણ નવકાર મંત્રમાં એકજવાર આવ્યો છે. એ ધર્મનું પાલન કેવી રીતે કરી શકાય તે દર્શાવે છે. સૂત્રમાં કહે છે: આજ્ઞા પાલનમાંજ ધર્મ છે. આધ્યાત્મિક રૂપે અને વ્યવહારિક રૂપે પણ નાના વડિલોની આજ્ઞામાં રહે એમાંજ ધર્મ છે. તેઓનું કલ્યાણ અને સુખશાન્તિ પણ એમાંજ છે. આજ અનુશાસન છે. તેથીજ પૂર્વાચાર્યોએ સંદેશ આપતાં કહ્યું છે. "મન્નહ જિણાણં આણં." એટલે જિનેશ્વર પરમાત્માની આજ્ઞાને પાળો એ પ્રથમ ધર્મ છે. જો આ પ્રાથમિક કક્ષાનાજ ધર્મનું પાલન ન કરી શકાય તો શેષ બધા આદેશોનું પાલન ન કરી નિરર્થક જ છે કેમ કે-

'આજ્ઞારાદ્ધા વિરાદ્ધા ચ શિવાય ચ ભાવાય ચ'

વીતરાગ દેવની આજ્ઞાનું પાલન કરવાથી આરાધક પણાના ભાવથી શિવપદ મળે છે. જ્યારે આજ્ઞા ઉલ્લંઘન રૂપ વિરાધકપણાના ભાવથી શીવપદ મલે છે. જ્યારે આજ્ઞા ઉલ્લંઘન રૂપ વિરાધકપણાના ભાવતી ભવભ્રમણ પણ વધી જાય છે.

આમ, નવકારના એ અક્ષરોથી ઘણી-ઘણી પ્રેરણાઓ મળે છે. સાચું તો એ છે કે વર્ણમાળામાં બધી વર્ણદિવ માતૃકાઓ છે તે શક્તિ સંપન્ન છે. સાધક ઈચ્છે તો પોતાના ઉત્થાનને માટે તેની સહાયતા લઈ શકે છે.

(આચાર્ય શ્રી જયંતસેનસૂરિજી મ.સાં.નું પ્રવચન)

● જેમ પલટાયેલો કવચધારી ઘોડો પોતાનો સ્વચ્છંદ રોક્યા પછી જ વિજયી થાય છે, તેમ મનુષ્ય પણ પોતાનો સ્વચ્છંદ રોક્યા પછી જ મોક્ષ પામી શકે છે. અપ્રમત્ત સાધકે ઘણા લાંબા સમય સુધી સંયમને આચરવો ઘટે, આમ કરવાથી તે જલ્દી મોક્ષગામી બને છે અને અનંત સુખને પામે છે.

શ્રી મહાવીર જૈન આરાધના કેન્દ્ર
(જિ. ગાંધીનગર)

ज्ञान-सूक्तियाँ

संकलनकर्त्री - पू. साध्वीजीश्री प्रियदर्शनाश्रीजी
पू. साध्वीजीश्री सुदर्शनाश्रीजी

सज्झाएवा निउत्तेण, सव्वदुक्खविमोक्खणे ।

– उत्तराध्ययन २६/१०

स्वाध्याय करते रहने से समस्त दुःखों से मुक्ति मिलती है ।

णाणुज्जोया साधु ।

(– नि. भाष्य २२५ – बृहत्कल्प भाष्य ३४५३ – अ. राजेन्द्र कोष भाग ६ पृ. ३५५)

साधक ज्ञान का प्रकाश लिए जीवन - यात्रा करता है ।

जो विणओतं नाणं, जं नाणं सो अ वुच्चई विणओ ।
विणएण लहइ नाणं, नाणेण वि जाणई विणयं ।।

– दशपयन्ना– अ. राजेन्द्र कोष भाग ४ पृ. १९८०

जो विनय है, वही ज्ञान है और जो ज्ञान है वही विनय कहा जाता है । विनय से ज्ञान प्राप्त होता है और ज्ञान से विनय जाना जाता है ।

विज्जाचरण सम्पन्नो, सो सेट्ठोदेवमानुसे ।

– मज्झिमनिकाय २/३/५

जो विद्या और चरण से सम्पन्न है, वह सब देवताओं और मनुष्यों में श्रेष्ठ है ।

वाचा सरस्वती भिषग् ।

– यजुर्वेद १९/१२

वाणी ज्ञान की अधिष्ठात्री होने से सरस्वती है, और उपदेश के द्वारा समाज के विकृत आचार विचार रूप रोगों को दूर करने के लिए वैद्य है ।

सं श्रुतेन गमेमहि मा श्रुतेन विराधिषि ।
अथवा - संश्रुतेन संगच्छेमहि, मा श्रुतेन विराधो – वियुक्तो मा भूवम् ।

– अथर्ववेद १/१/४

हम सब श्रुत (ज्ञान) से युक्त हों, श्रुत (ज्ञान) के साथ कभी हमारा वियोग न हो ।

वाग् वै सरस्वती ।

वाणी ही सरस्वती है ।

– तैत्तिरीय ब्राह्मण १/३/५

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिहविद्यते ।

– भगवद्गीता ४/३८

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र और कुछ नहीं है ।

डाक पंजीयन क्रमांक MH/THN १६१ पहले से डाक व्यय चुकाये बिना भेजने की
अनुमति प्राप्त लायसेन्स नं. ३५

संपादक - जे.के.संघवी अ.भा. श्री. राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के लिये
डपूजी आर्ट प्रिन्टर्स- थाने में मुद्रित।